RNI No. : UPHIN/2017/74695

डाक पंजीकरण सं. :
एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी. - 558/2018-2020

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 2 अंक : 10 | लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

सम्पादक की कलम से ...

मेरे फोटोग्राफर साथियों,

साथियो स्टूडियो न्यूज़ के अप्रैल 2019 के अंक के साथ हम आपके समक्ष हैं।

आजकल एक मुद्दा बहुत जोरो से प्रचलित है कि इक्विपमेंट और क्रिएटिविटी में कौन बेहतर है। सर्वप्रथम फोटोग्राफी एक कला है, बिना कला के फोटोग्राफी संभव नहीं है। कला के बिना तस्वीर में सजीवता नहीं आ सकती, अतएव कला का समावेश तस्वीर में होना अत्यंत आवश्यक है। फोटोग्राफी खुद को व्यक्त करने का एक माध्यम है। फोटोग्राफी व्यक्ति के अंदर छुपी कला और रचनात्मकता की अभिव्यक्ति का जरिया है। अगर आप के अंदर कल्पना शक्ति है तो आप एक कामयाब फोटोग्राफर बन सकते हैं। अब अपनी कला को तस्वीर में लाने के लिए आपको इक्विपमेंट की जरूरत है। आप जैसा सोच रहे हैं किसी तस्वीर के बारे में उसको वैसे ही उतारने के लिए आपको इक्विपमेंट के साथ-साथ उस इक्विपमेंट को जानने की भी आवश्यकता है। आज के समय में फोटोग्राफर होने के लिए आपको कला, इक्विपमेंट और इक्विपमेंट की जानकारी होना अति आवश्यक है। बिना तीनों का समावेश किये आप एक अच्छे फोटोग्राफर नहीं बन सकते। अपनी कला में निखार लाने के लिए आपको निरन्तर लोगो की अच्छी फोटोग्राफ्स देखनी चाहिए, जिससे आप कम्पोजीशन, लाइट के बारे में जान सकेंगे और अपनी तस्वीरों को और सजीव बना सकेंगे। इक्विपमेंट का चयन भी अति आवश्यक है, इसके लिए आप कंपनी की तरफ से आयोजित वर्कशॉप में समलित हो तथा वहाँ पर कंपनी की तरफ से आये टेक्निकल स्टाफ से कैमरे के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और वहाँ पर कंपनी के द्वारा कैमरो को प्रदर्शित भी किया जाता है, आप वहाँ कैमरो को चला कर देख भी सकते हैं। आज के दौर में ये जानना अति आवश्यक है कि आपको किस इक्विपमेंट की जरूरत है क्योंकि बिना कला के इक्विपमेंट आपको लेबर बना सकता है कलाकार नहीं। आपको अगर अपने प्रोफेशन से व्यापार में आगे बढ़ना है तो आपको कलाकार बनना पड़ेगा। जब तक आप में सीखने की जिज्ञासा होगी तभी तक आप आगे बड़ पाएंगे क्योंकि कलाकार तभी तक है जब तक उसमें जूनून है अपनी कला के प्रति। हमारे क्षेत्र में निरंतर प्रयास अति आवश्यक है, जितना आप प्रयास करते रहेंगे उतना आपके कार्य में निखार आता जायेगा। हमारे देश में बहुत सारे स्थान, रीति-रिवाज़, त्योहार आदि है जो फोटोग्राफी के लिहाज से उपुक्त हैं।

भारत वर्ष त्योहारों का देश है जहां रंगो और उल्लहास का समावेश देखने को मिलता है। फोटोग्राफी के लिहाज़ से ये त्यौहार अति महत्वपूर्ण है। आप अपने आस-पास ही ऐसा माहौल देखते है जो फोटोग्राफी की दृष्टि से उपुक्त होता है। इस अंक में हमने मथुरा की होली के कुछ फोटोग्राफस को प्रकाशित किया है, ऐसे ही हमने पिछले अंक में कुम्भ की फोटोग्राफ्स को प्रकाशित किया था। आप लोग भी त्योहारों की फोटोग्राफ्स भेज सकते हैं, हमारी टीम जिन फोटोग्राफ्स को सेलेक्ट करेगी उनको हम फोटोग्राफर्स के नाम के साथ प्रकाशित करेंगे।

इस अंक में हमने इमेज शार्पनेस पर भी कंटेंट दिया है, साथ में पोट्रैट फोटोग्राफी के बारे में बताया है। हम हर अंक में अपने समय के जो बेहतरीन फोटोग्राफर्स रहे है उनके बारे में में भी बताते है, जिससे हम और आने वाले फोटोग्राफर साथी उनके बारे में जाने। कैमरा रिव्यु के साथ-साथ हम एक टेक्निकल आर्टिकल भी आप तक पहुंचाते हैं। इस अंक में इतना ही।

सुरेंदर सिंह बिष्ट
सम्पादक

दिनांक 15 मार्च 2019 को कानपुर में उत्तर प्रदेश फोटोग्राफर एसोसिएशन, कानपुर फोटोग्रफिक एसोसिएशन, स्टूडियो न्यूज़ और पैनासोनिक इंडिया ने मिल कर एक वेडिंग वर्कशॉप का आयोजन किया।

दिनांक 23 मार्च 2019 को कानपुर फोटोग्रफिक एसोसिएशन द्वारा अपने मेंबर्स के लिए एक होली मिलन का कार्यक्रम डिफेंस क्लब कैंट में आयोजित किया गया। जिसमें उत्तर प्रदेश एसोसिएशन से श्री सुरेंद्र सिंह बिष्ट (स्टूडियो न्यूज़) और फ़ोटो फेयर ट्रस्ट से श्री ब्रजेश भाटिया सहित अच्छी संख्या में मेंबर्स ने एक दूसरे को होली की शुभकामनाएं दी।

24.03.2019 दिन रविवार को बनारस कैमरा सोसाइटी और फोटोग्राफर एसोसिएशन उत्तर प्रदेश की ओर से निःशुल्क फोटोग्राफी की कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 26.03.2019 को स्थानीय वैभव लॉन में हरदोई फोटोग्राफर्स एसोसिएशन के बैनर तले होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ फोटोग्राफर राम शरण गुप्ता ने की। कार्यक्रम का संचालन हरदोई फोटोग्राफर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष दीपक कपूर ने किया।

दिनांक 28.03.2019 को लखनऊ में फुजी फिल्म द्वारा वेडिंग वर्कशॉप का आयोजन फोटोग्राफर एसोसिएशन उत्तर प्रदेश एवं लखनऊ फोटोग्राफर्स एसोसिएशन द्वारा किया गया।

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 2 अंक : 10 | लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

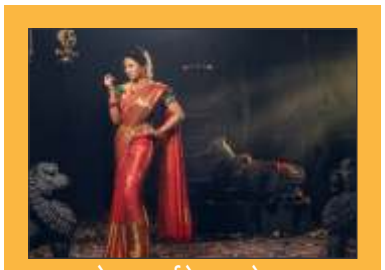

इमेज शार्पनेस - पेज 4

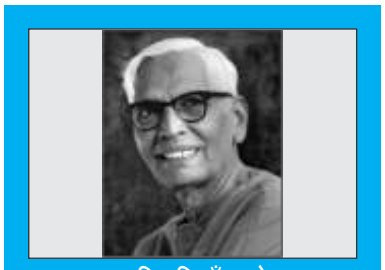

महान विभूतियाँ - पेज 7

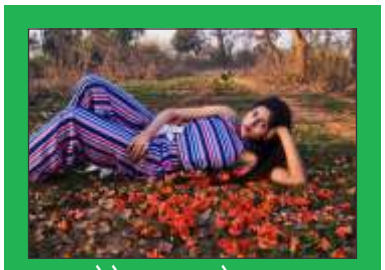

पोट्रेट शूट - पेज 8-9

फोन कैमरा - पेज 13

होली - पेज 15

ल्यूमिक्स DMC-FZ2500 : बेहतरीन फोटो/वीडियो हाईब्रिड कैमरा

बेहतरीन फोटो/वीडियो हाइब्रिड कैमरा

उनके लिए जो लाजवाब फोटो के रचयिता हैं और जो बेहद प्रोफेशनल है। इस कैमरे में है गजब का वीडियोग्राफिक प्रदर्शन, बढ़िया जूम और 25.4 एमएम सेंसर। यानी यह प्रोफेशनल सभी जरूरतों को पूरा करता है, जो 1 इंच टाइप एमओएस सेंसर, 20× ऑप्टिकल जूम, 4K वीडियो के साथ है।

नए विकसित फोटो/वीडियो हाइब्रिड लेंस

LEICA का नया F2.8-4.5 24-480 mm DC VARIO-ELMARIT लेंस फोटो व वीडियो दोनों हो ही बढ़िया ऑप्टिकल परफॉर्मेंस देता है। इस लेंस का अंदरूनी जूम सिस्टम गाइड-पोल मैकेनिज्म के साथ है। यह देता है सुविधाजनक व स्थायी जूमिंग और एफजेड 1000 से तुलना करें तो यह 80 फीसद तक इमेज को सप्रेस भी कर देता है।

कोरलेस डीसी मोटर देता है धीमी और लगातार जूमिंग क्षमता वाइड से 20x tele-अंत तक। प्रोफेशनल वीडियो कैमरे में इस्तेमाल होने वाला गैलवैनोमीटर ड्राइव आइरिस ब्राइटनेस में तुरंत हुए बदलाव को पकड़ लेता है। इससे ये लेंस जूमिंग के दौरान भी स्मूथ आइरिस कंट्रोल करता है।

कंपैक्ट बॉडी में 20× ऑप्टिकल जूम

LEICA DC VARIO-ELMARIT लेंस में है एफ2.8-4.5 ब्राइटनेस जो कि टेलिफोटो शॉट व 24एमएम से भी अधिक वाइड एंगल से लेकर 20× ऑप्टिकल जूम बॉडी साइज मेंटेन होने के दौरान तक ब्लर नहीं होने देता। लेंस यूनिट में 11 ग्रुप में 16 इलिमेंट हैं, जिसमें 4 ईडी लेंस, 5 एस्फिरिकल लेंस 8 एस्फिरिकल सरफेस के साथ और UHR लेंस भी।

MTF वैल्यू में LEICA के स्ट्रिंजेंट स्टैंडर्ड पर यह लेंस खरा उतरता है और तेज जगमगाहट का भी दमन करता है।

बिल्ट इन एनडी फिल्टर फ्लेक्सिबल एक्सपोजर कंट्रोल के लिए

बिल्ट इन एनडी फिल्टर क्रिएटिव वीडियो शूटिंग के लिए जरूरी है। आप फिक्स शटर स्पीड या ओपन अपर्चर में एक्सपोजर लेवल को मेंटेन करते हुए ज्यादा ब्राइटनेस में भी वीडियो रिकॉर्ड कर सकते हैं।

स्टिल फोटो रिकॉर्डिंग के लिए यह सुंदर बोकेह इफेक्ट देता है और साफ आसमान में भी स्लो शटर शूटिंग की सहूलियत प्रदान करता है।

30 एमएम मैक्रो शूटिंग

लाजवाब मैक्रो फोटो न्यूनतम फोकसिंग दूरी यानी 30 एमएम से शूट की जा सकती हैं। आप क्लोज अप शॉट जैसे फूल, मधुमक्खी इत्यादि को ल्यूमिक्स एफजेड2500 से मजे से शूट कर सकते हैं।

प्रो क्वालिटी के लिए वीडियो क्रिएशन

ल्यूमिक्स एफजेड 2500 इतना विकसित है कि यह प्रोफेशनल क्वालिटी और स्टैंडर्ड को पूरा करता है। 4K क्षमता के साथ (सिनेमा 4K 4096 × 2160 / 24 FPS और QFHD 4K 6 3840×2160 / 30 FPS तक) MOV / MP4 में वीडियो रिकॉर्डिंग और अल्ट्रा हाई बाइट्रेट फुल एचडी वीडियो रिकॉर्डिंग 200एमबीपीएस तक (ऑल इंट्रा)/ 100 एमबीपीएस (आइपीएस) वीडियो रिकॉर्डिंग समय सीमा के बिना।

इसके अलावा, प्रोफेशनल वीडियो रिकॉर्ड करने के लिए जरूरी तमाम प्रकार के फंक्शन भी एकीकृत किए गए हैं।

लाइव आउटपुट एचडीएमआइ से

वैकल्पिक माइक्रो एचडीएमआइ केबल के माध्यम से रियल टाइम इमेज आउटपुट (4:2:2/8 बिट या 4:2:2/10 बिट) एस्टर्नल मॉनिटर तक सक्षम है ल्यूमिक्स एफजेड2500 ।

यह उन प्रोफेशनल वीडियो को बनाने के लिए सशक्त है जिसमें इमेज की गंभीर मॉनिटरिंग की जरूरत होती है। आप केवल रिकॉर्डिंग कंटेट को आउटपुट करने के लिए या फिर सेटिंग के साथ कंटेट को चुन सकते हैं। यह डिस्प्ले पर निर्भर करता है।

बड़ा 25.4 एमएम सेंसर- कम रोशनी में भी गजब तस्वीर

बड़ा 25.4 एमएम 20.1 मेगापिक्सल हाई सेंसिटिविटी एमओएस सेंसर एस/एन रेशियो सुधारता है, इससे कम गड़बड़ी के साथ तब भी साफ इमेज आती है जब आइएसओ 12800/ एक्सटेंडेड आइएसओ 25600 में शूट किया जा रहा हो।

अच्छी रोशनी से फील्ड की कम गहराई के साथ बढ़िया डीफोकस बनता है। इससे कई प्रकार की शूटिंग परिस्थितियों में लाजवाब इमेज बनती है।

एडवांस इमेज प्रोसेसर वीनस इंजन

ल्यूमिक्स एफजेड2500 में है वही वीनस इंजन जो कि ल्यूमिक्स हाई-एंड सिस्टम कैमरे में है। यह देता है हाई क्वालिटी इमेज कैप्चर और हाई स्पीड सिग्नल प्रोसेसिंग जो कि 4K वीडियो रिकॉर्डिंग और हाई बिट रेट वीडियो रिकॉर्डिंग में जरूरी है। हाई सेंसिटिविटी एमओएस सेंसर और वीनस इंजन से मिलती है खूबसूरत फोटो क्वालिटी कम रोशनी वाली परिस्थितियों में भी। उच्च पिक्चर क्वालिटी के लिए यह सेंसेटिविटी, ग्रैडेशन प्रदर्शन, रिज्यॉल्यूशन और रंग प्रोडक्शन को सुधारता है।

अल्ट्रा हाई स्पीड फोकसिंग

डीएफडी (डेप्थ फ्रॉम डीफोकस) तकनीक से अब आप तेज चलने वाले एक्शन को भी कैप्चर कर सकते हैं। यह दो इमेज के अलग-अलग शार्पनेस लेवल को समझ कर तुरंत सब्जेक्ट की दूरी कैलकुलेट कर सकता है। साथ ही अल्ट्रा-हाई स्पीड एएफ और एएफसी के साथ 7एफपीएस बर्स्ट शूटिंग पाता है। 12एफपीएस शूटिंग एएफएस के साथ ही उपलब्ध है।

0.74 × बड़ा OLED LVF 2360K डॉट के साथ

हाई रिज्यॉल्यूशन 2360K डॉट OLED लाइव व्यू फाइंडर देता है हाई विजिबिलिटी, शुक्र है 10000:1 कंट्रास्ट और सीधी सनलाइट में भी परफेक्ट फ्रेमिंग का।

हाई 0.74× मैग्निफिकेशन (बराबर 35 एमएम कैमरा) और वाइड-व्यू एंगल से इमेज की पूरी डिटेल तब भी देखी जा सकती है जब व्यूफाइंडर के केंद्र पर आंखें न हो।

झुकाव क्षमता के साथ रियर मॉनिटर देता है आसान ऑपरेशन और फुल इमेज कंट्रोल मेंटेन करने के साथ असामान्य आयाम खोजने की आजादी। इसके साथ ही, टच कंट्रोल से आप स्क्रीन को छू कर सब्जेक्ट पर फोकस कर सकते हैं। एक टच से आप शटर भी रिलीज कर सकते हैं।

डायरेक्ट, इन्ट्यूटिव लेंस बैरल ऑपरेशन

डुअल रिंग कंट्रोल सिस्टम से मिलता है फोकस व जूम, ल्यूमिक्स-जी जूम लेंस के जैसे ही। लेंस बैरल पर एनडी फिल्टर और थ्री एफएन बटन प्रोफेशनल वीडियो कैमरे की तरह ही देते हैं स्मूथ वीडियो ऑपरेशन।

डब्लू बी कलर टेंपरेचर सेटिंग और धीमे व त्वरित जूम सेटिंग एफएन बटन्स में आवंटित की जो सकती है जो कि वीडियो ऑपरेशन को बढ़ाता है।

सब सही जगह पर

यह वजनीय है लेकिन इसकी अच्छी ग्रिप से आपको पकड़ने में दिक्कत नहीं होगी। फ्रंट/रियर डुअल डायल सिस्टम से आपको मिलेगी शटर स्पीड और अपर्चर की डायरेक्ट सेटिंग, ल्यूमिक्स जी कैमरे के जैसा ही। ऑप्टिमम डायल, बटन, लिवर व स्विच लेआउट देता है इन्ट्यूटिव, आरामदेह कंट्रोल फोटो और वीडियो शूटिंग दोनों के लिए ही।

4K फोटो के साथ अब कोई लम्हा मत मिस करिएगा

शुक्र है ल्यूमिक्स एफजेड2500 में 4K तकनीक का। 4K फोटो से आप परफेक्ट लम्हों को 30 एफपीएस में कैप्चर कर सकते हैं और शूटिंग के बाद अपनी बेस्ट तस्वीर भी चुन सकते हैं। शूट करिए, सेलेक्ट करिए और सेव करिए। ल्यूमिक्स एफजेड2500 के 4K फोटो मोड में लम्हों को खोने मत दीजिए।

मूल्य- लगभग 87,600 रूपये

इमेज शार्पनेस

वाइल्डलाइफ या वेडिंग फोटोग्राफी, में एक सटीक शार्प इमेज कैसे पायें, इसके बारे में बता रहे हैं जाने माने फोटोग्राफर

- आर. प्रसन्ना

किसी भी प्रकार की फोटोग्राफी के लिए इमेज शार्पनेस एक महत्वपूर्ण पहलु है। चाहे वेडिंग फोटोग्राफी हो या फिर वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी, एक सटीक शार्प इमेज लाना फोटोग्राफर की परीक्षा समान होता है।

बड़ा और बेहतर सेंसर और अच्छी क्वालिटी लेंस पाने की कैमरा कंपनियों की मेगापिक्सल के रेस के बीच फोटोग्राफर्स को लगने लगता है कि शार्प इमेज पाने के लिए आधुनिक कैमरे की जरूरत होती है।

लेकिन हकीकत इससे जुदा है। इस आर्टिकल में हम जानेंगे कि इमेज की शार्पनेस को कौन-कौन से कारक प्रभावित करते हैं। सेंसर क्वालिटी, फोटोग्राफी तकनीक या फिर लेंस?

फोटोग्राफर्स और क्लाइंट जो कि इमेज 100 पर्सेंट पर देखते हैं, उस वक्त शार्प इमेज का न आना शर्म की बात हो सकती है।

इसे हम दो हिस्सों में विभाजित करेंगे। पहला, वह बाहरी कारक जो हमारे हाथ में नहीं हैं और दूसरा इंटरर्नल फैक्टर्स जो हमारे कंट्रोल में हैं।

कभी-कभी एक्सटर्नल फैक्टर इमेज शार्पनेस में महत्वपूर्ण रोल अदा करते हैं।

उदाहरण के तौर पर जब आप कोई शादी कवर कर रहे हैं और हॉल में काफी धुंआ हो तो उस धुएं के बीच सारी लाइट चली जाती है और इससे शार्पनेस पर असर पड़ता है। ऐसे में कम शार्प फोटोज़ आएंगी और फोटोग्राफर यही बात सोचता रहेगा कि आखिर गलती कहां हुई। चूंकि कई रसमों में हवन इत्यादि होते हैं इसलिए विवाह के तमाम रीति-रिवाज़ों के बीच उनसे यह भी नहीं कहा जा सकता कि धुएं का प्रयोग न करें।

ऐसा ही आउटडोर फोटोग्राफी में भी होता है। यदि फोटोग्राफर धुंध के बीच शूट कर रहा है तो इमेज में शार्पनेस कम होगी। यहां तक कि नदी के किनारे भी आप पाएंगे कि पानी कि किनारे एक धुंध है जिससे शार्पनेस पर असर पड़ता है।

इसका एक ही उपाय है, लाइटरूम जैसे सॉफ्टवेयर में क्लैरिटी स्लाइटर के इस्तेमाल से यह समस्या काफी हद तक दूर हो सकती है।

अब उन पहलुओं पर गौर करते हैं जो हमारे कंट्रोल में हैं। पहला है यूवी फिल्टर जहां से कैमरे में रोशनी प्रवेश करती है।

अच्छी क्वालिटी का यूवी फिल्टर शार्प इमेज के जरूरी है। कई फोटोग्राफर्स महंगा कैमरा खरीद के सस्ता व कम क्वालिटी का यूवी फिल्टर फिट करा लेते हैं, इससे शार्पनेस अच्छी नहीं आती।

मैंने ऐसे फोटोग्राफर्स देखें है जो हाई एंड कैमरे से शूट करते हैं और उसमें गंदा सा यूवी फिल्टर होता है जिसमें उंगलियों के निशान भी बने होते हैं। यूवी फिल्टर को साफ रखना जरूरी है। समय-समय पर इसे बदलते भी रहें। कई फोटोग्राफर यूवी फिल्टर एकदम इस्तेमाल नहीं करते। शादी फोटोग्राफी में हल्दी व रंग आपके लेंस को खराब कर सकते हैं, इसका भी ख्याल रखना जरूरी है।

डिफ्रैक्शन भी शार्पनेस पर प्रभाव डालता है। हम सब जानते हैं कि कम एफ नंबर यूज़ करने से फील्ड की गहराई और शार्पनेस बढ़ जाती है। लेकिन कितने लोग जानते हैं कि मार्डन कैमरा सेंसर के साथ यह बात सही नहीं है। खासतौर पर वह कैमरे जिनमें 45एमपी जैसा ज्यादा मेगापिक्सल है।

यदि एक बार लेंस एफ11 पर रूक जाए तो इमेज सॉफ्ट हो जाती है, ऐसा सेंसर की डिफ्रैक्शन लिमिट के कारण होता है। इसलिए ज्यादा मेगापिक्सल के साथ कम अपर्चर प्रयोग करने से बेहतर है ज्यादा शार्पनेस के लिए फोकस स्टैकिंग का उपयोग करें।

पिक्सल ब्लर एक और कारण है जिसकी वजह से हाई मेगापिक्सल कैमरे में शार्पनेस नहीं आ पाती। जितना ज्यादा मेगापिक्सल होगा उतना ज्यादा पिक्सल ब्लर होने की संभावना होगी जो कि फोटो खराब कर सकती है। शटर बटन दबाने पर हल्के से शेक से पिक्सल ब्लर हो सकता है।

खासतौर पर हाई मेगापिक्सल कैमरे के लिए जिन्हें हाथ में लेकर वेडिंग शूट करना मुमकिन नहीं है। 1/125 की शटर स्पीड पर भी पिक्सल ब्लर हो सकता है।

इसलिए इन कैमरों में कम शटर स्पीड के लिए मिरर अप के साथ ट्राइपॉड व रिमोट रिलीज यूज़ करने की सलाह दी जाती है।

मिरर का वाइब्रेशन भी उपर-नीचे होता है और जिससे शार्पनेस नहीं आ पाती। यह एक कारण था कि मैंने मिररलेस की जगह आइबीआइएस (इन बॉडी इमेज स्टैबलाइजेशन) इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

खराब रख-रखाव भी अनशार्प फोटोज़ का एक कारण है। शादी में कैंडिड फोटोग्राफी में हाथों में दर्द होने लगता है और कैमरा हिलने भी लगता है। इसलिए ऐसे में मोनोपॉड इस्तेमाल करना अच्छा होता है।

अच्छी क्वालिटी का फिल्टर, अच्छा ट्राइपॉड प्रयोग करिए। किसी भी बड़े शॉट को करने से पहले अपने कैमरे की सेटिंग को अच्छी तरह पहचान लीजिए और देखिए कि आपको लाजवाब शार्प फोटोज़ मिलती हैं।

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019

एक इंसान का किरदार एक फोटोग्राफ की तरह अंधेरे में ही पनप सकता है। -- यूसुफ कार्ष

खास आपके लिए, पेश है

कैनन का EOS RP सबसे छोटा फुल फ्रेम मिररलेस कैमरा ...

यह है बेहद हल्का और कम वजन वाला

EOS RP के RF माउंट की खासियत, 54mm बड़ा माउंट डायामीटर (व्यास) और किनारे की फ्लैअंज फोकल दूरी 20mm है।

इसका फायदा : लेंस डिजाइनिंग (खासतौर पर तेज, ब्राइट और वाइड एंगल लेंस) में नई संभावनाएं प्रदान करता है।

हाई स्पीड कम्यूनिकेशन के लिए इसमें है 12 पिन कनेक्शन जिससे कैमरा व लेंस के बीच हाई स्पीड कम्यूनिकेशन संभव है।

EOS RP की क्वालिटी व परफॉर्मेंस

EOS RP में है नया 35mm फुल फ्रेम CMOS सेंसर जिसमें लगभग 26.2 मेगापिक्सल है। इसे कैनन ने डेवलप व मैन्युफैक्चर किया है और DIGIC 8 प्रोसेसर देता है गजब की इमेज क्वालिटी, तस्वीर के लिए ISO 100-40000, FHD मूवी के लिए ISO100-25600 और 4K में ISO 100-12800 का स्टैंडर्ड ISO सेंसिटिविटी रेंज है।

डुअल सेंसिंग IS/ कॉम्बिनेशन IS

EOS RP की इमेज स्टैबलाइजेशन यह EOS डीएसएलआर कैमरे का ही विकसित रूप है।

इसका फायदा : 5 एक्सिस इमेज स्टैबलाइजेशन के साथ ही 5 स्टॉप तक इफेक्टिव इमेज स्टैबलाइजेशन प्रदान करता है (RF लेंस के साथ जुड़ने के बाद)।

एडवांस IS सिस्टम लेंस से डाटा लगातार लेता रहता है और इमेज सेंसर को जानकारी देता है, जो हिलने का अंतर वापस लेंस को भेजता है जिससे सटीक स्टेबनाइजेशन मिलता है। इसकी वजह से शूटिंग के दौरान तमाम प्रकार के शेक के बावजूद प्रदर्शन अच्छा रहता है।

कॉम्बिनेशल IS (IS + मूवी डिजिटल IS) खासतौर पर मूवी के लिए जो IS के साथ या बिना भी लेंस के ब्लर करेक्शन पर ध्यान देती है। EOS RP बेहतरीन वीडियो बनाने में मदद करता है।

EOS RP - डुअल पिक्सल CMOS AF का विकास

कैनन का फेमस AF सिस्टम डुअल पिक्सल CMOS AF 0.05 सेकेंड स्पीड के साथ काफी रिस्पांसिव है। EOS RP तेज AF फ्रेम सेलेक्शन के लिए 4779 AF प्वाइंट पोजिशन तक सपोर्ट करता है। यह पोजिशन हाई स्पीड फोकसिंग और किसी भी फोटो कंपोजिशन में फ्लैक्सिबिलिटी लाती है।

AF कवरेज एरिया को सेंसर सरफेस एरिया के 88 फीसद तक बढ़ा दिया गया है। RF लेंस इसे सपोर्ट करते हैं और EF लेंस कंपैटेबल हैं।

एक बढ़िया फीचर - EV-5 की लो लाइट कैपेबिलिटी उस समय शूटिंग को सुविधाजनक बनाती है जब सब्जेक्ट आंखों को दिखाई तक नहीं पड़ता। पूरे एरिया में f/11 अर्पचर पर भी फोकस करना संभव है।

ऐसी परिस्थितियां जहाँ कैमरे को सब्जेक्ट के हिलने-डुलने, चलने-फिरने के बारे में पता ही नहीं चल रहा, ऐसे में EOS RP का आइ डिटेक्शन AF सब्जेक्ट की आंखों पर फोकस करेगा, जिसके परिणाम स्वरूप बेहतरीन पोर्टेट लिए जा सकेंगे।

Focus Bracketing मैक्रो फोटोज को लेने के दौरान पूरे फ्रेम को फोकस में लेना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसके लिए फोकस ब्रैकेटिंग, EOS RP का नया फीचर है जो कि उम्दा हाई रिज्यॉल्यूशन फोटो में बेहद सफाई से आता है। तो है ना ये कमाल की चीज!

EOS RP - सिनेमैटिक 4K UHD @24P और भी बहुत कुछ

अब वीडियोग्राफी हुई बहुत सरल

EOS RP प्रोफेशनल वीडियोग्राफी के लिए भी है। यह फुल फ्रेम कैमरा आपको गजब का परफॉर्मेंस देता है। यह 4K UHD मूवीज 24P/25P पर रिकॉर्ड करता है। साथ ही FHD 60P/50P पर डुअल पिक्सल CMOS AF सिस्टम प्रदान करता है। आइ डिटेक्शन AF, मूवी सर्वो AF फंक्शन के साथ भी उपयोग किया जा सकेगा।

जबरदस्त वीडियो स्नैपशॉट फंक्शन

वीडियो स्नैपशार्ट फंक्शन से आप 4, 6 और 8 सेकेंड्स की छोटी वीडियो FHD में 30P/25P पर आसानी से शूट कर सकते हैं। HDMI 4K आउटपुट के सपोर्ट से 4K फुटेज बाहरी डिवाइस पर रिकॉर्ड व डिस्प्ले हो जाती है।

Av1/8 RF लेंस प्रयोग कर रहे हैं तो AV सेटिंग 1/8 स्टॉप इंक्रीमेंट में एडजस्ट हो सकती है।

4K Time-Lapse Movie टाइम लैप्स मूवीज या तो FHD में या 4K UHD में शूट कर सकते हैं।

4K Frame Grab फ्रेम्स को 4K मूवी फुटेज से निकाल कर jpeg में भी सेव किया जा सकता है

EOS RP - बेहद आसान है इस्तेमाल करने के लिए

नया EOS RP बहुत ही हल्का और छोटा है। इसका वजन केवल 485 ग्राम है और यह तीन इंच, 1.04 मिलियन डॉट्स, वैरी-एंगल टचस्क्रीन एलसीडी मॉनिटर के साथ है। यह कैमरा मैग्नेशियम एलॉय बॉडी से बना है जो इसे मजबूती प्रदान करता है। यह कैमरा हल्की बूंदा-बादी व डस्ट से पूरी तरह सुरक्षित है। इसका नया कलर व ब्राइटनेस एजस्टमेंट फंक्शन 2.36 मिलियन डॉट हाई रिज्यॉल्यूशन OLED इलेक्ट्रानिक व्यू फाइंडर लगभग 22mm आई प्वाइंट के साथ फोटोग्राफर EVF डिस्प्ले का रंग एलसीडी मॉनिटर के अलग से एजडस्ट कर सकते हैं।

अब आप अपनी बैट्री पैक हाई-स्पीड USB (USB 2.0/टाइप-सी) PD-E1 USB पावर एडैप्टर के माध्यम से भी चार्ज कर सकते हैं। ध्यान रहे पावर अडैप्टर अलग से मिलता है।

नई एक्सटेंशन ग्रिप EG-E1 (लगभग 86ग्राम)

EOS RP आता है एक्सटेंशन ग्रिप EG-E1 (लगभग 86ग्राम) के साथ। यह फोटोग्राफर्स के लिए एक वैकल्पिक गियर है जिसे वह EOS RP में अटैच कर सकते हैं। इससे उन्हें कैमरा पकड़ने और उपयोग करने में आसानी होती है। खासतौर पर तब जब भारी व टेलीफोटो लेंस हो।

एक्सटेंशन ग्रिप यदि कैमरे से अटैच भी है तो भी फोटोग्राफर बैट्री बदलने के साथ-साथ एसडी कार्ड बदल सकते हैं या ट्राइपॉड भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

नेटवर्क कनेक्टिविटी वाई-फाई/ ब्लूटूथ

अपनी रियल टाइम फोटो व वीडियो शेयर करें कैमरा कनेक्ट एप या इमेज ट्रांसफर यूटिलिटी 2 से वाई-फाई कनेक्शन के माध्यम से।

इससे बेहतर कुछ नहीं

एकदम नया फुल फ्रेम कैमरा लेना व अपग्रेड करना इतना आसान कभी नहीं था। EOS RP बॉडी की कीमत है ₹1,10,495.00 (टैक्स मिला कर)। किट लेंस के साथ EOS RP लेंस (RF 24-105 f4L IS USM) का मूल्य है ₹1,99,490.00 (टैक्स मिला कर)।

Marketing Initiative

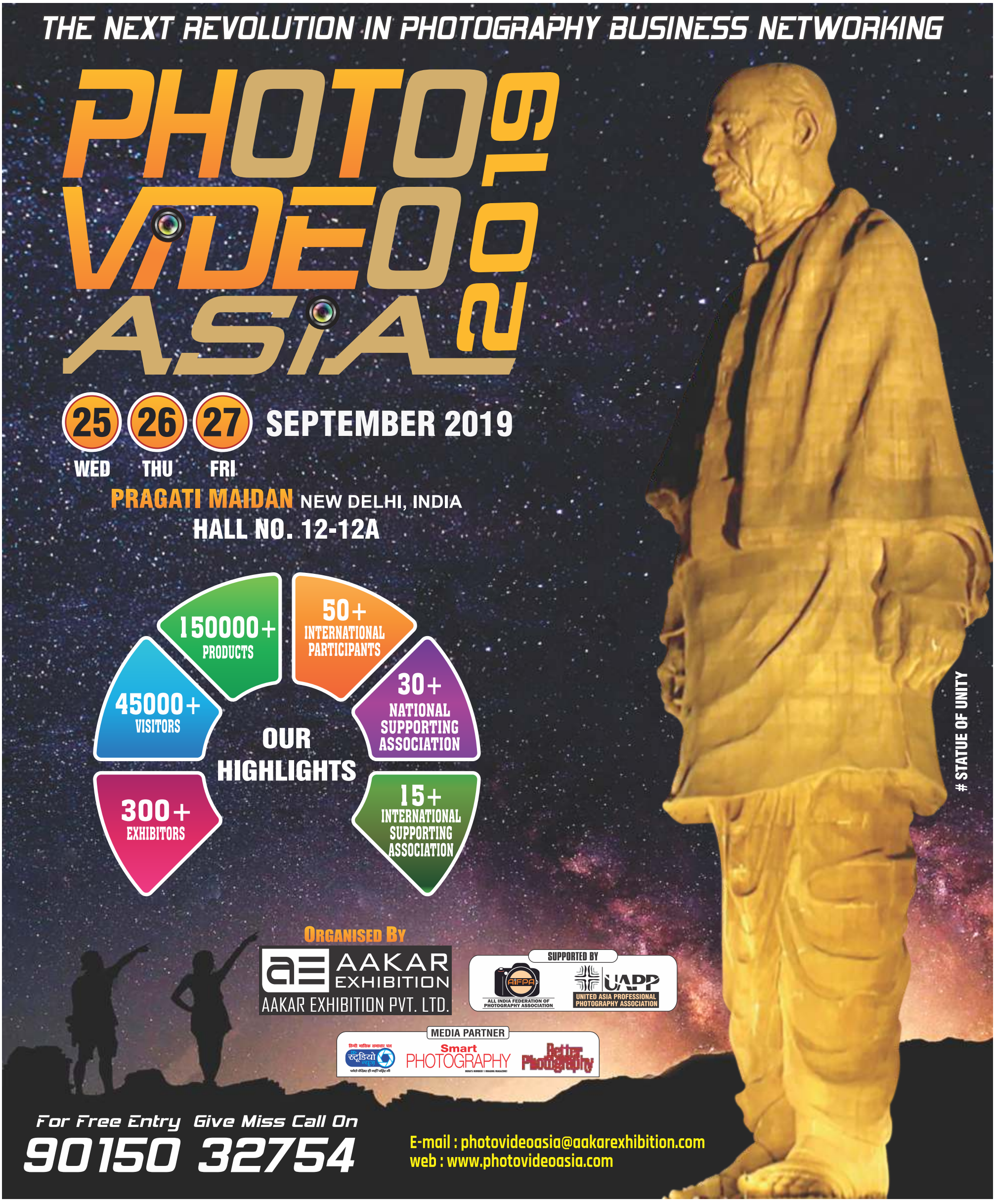
THE NEXT REVOLUTION IN PHOTOGRAPHY BUSINESS NETWORKING
PHOTO VIDEO ASIA
25 WED
26 THU
27 FRI
SEPTEMBER 2019
PRAGATI MAIDAN NEW DELHI, INDIA
HALL NO. 12-12A
OUR HIGHLIGHTS
150000+ PRODUCTS
50+ INTERNATIONAL PARTICIPANTS
45000+ VISITORS
30+ NATIONAL SUPPORTING ASSOCIATION
300+ EXHIBITORS
15+ INTERNATIONAL SUPPORTING ASSOCIATION
STATUE OF UNITY
ORGANISED BY
AAKAR EXHIBITION
AAKAR EXHIBITION PVT. LTD.
SUPPORTED BY
AIFPA ALL INDIA FEDERATION OF PHOTOGRAPHY ASSOCIATION
UAPP UNITED ASIA PROFESSIONAL PHOTOGRAPHY ASSOCIATION
MEDIA PARTNER
स्टूडियो न्यूज
Smart PHOTOGRAPHY
Better Photography
For Free Entry Give Miss Call On
90150 32754
E-mail : photovideoasia@aakarexhibition.com
web : www.photovideoasia.com

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019

फोटोग्राफी में खेल की तरह कोई नियम नहीं होते, सिर्फ अंत में परिणाम ही मायने रखता है। -- बिल ब्रैंट

महान विभूतियाँ

डॉ. दोद्देरी वेंकटागिरी राव

AFIAP, APSA, ESFIAP, FPSA, Hon-EFIAP

(1912 - 2003)

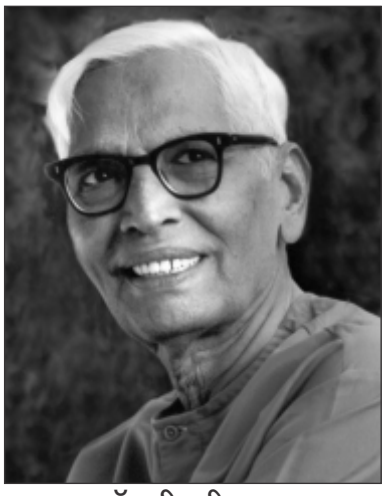

डॉ. डी. वी. राव

दूसरों से हर मायने में भिन्न, ऊंचा कद और विशाल व्यक्तित्व और खुद में इतने सीमित कि दूसरा कोई बात करने में सौ बार सोचे। हकीकत में वह बेहद सरल, साधारण और अपने आसपास के वातावरण से हमेशा मोहित रहते थे। खासतौर पर युवाओं और महिलाओं से। उन्हें जानने वाले उनकी सकात्मकता के प्रशंसक थे।

डॉक्टर राव कन्नड़ भाषा के जाने-माने लेखक थे। इतने मशहूर कि मुख्य भारतीय लेखकों में उनका नाम शुमार है। कन्नड़ में सौ लेखों के अलावा वह करीब 10 किताबें भी लिख चुके हैं।

यदि डॉक्टर राव को साहित्य और फोटोग्राफी का एक दुर्लभ मिश्रण कहा जाए तो यह गलत नहीं होगा। 1943 में उनकी पहली कविता संग्रह "रोहिणी" प्रकाशित हुई थी। इसके बाद "थिंबुडाकोड़ा" नामक कहानियों का संग्रह 1946 में आया। यह उनके लेखन सफर की शुरूआत थी।

उन्होंने इसके साथ ही फोटोग्राफी की कला में महारथ हासिल की और कैमरे को साहित्यिक दृष्टि से जोड़ दिया। उनके बारे में एक चौंकाने वाली बात यह है कि इसी समय वह प्रोफेशनल रूप से कर्नाटक के शिमोगा में मेडिकल की प्रैक्टिस भी कर रहे थे।

चूंकि वह मेडिकल प्रैक्टिस कर रहे थे इसलिए चिकित्सा कला व ग्रामीण सेवा में अत्यंत सुख पाते थे। इसके अलावा डॉ राव ने फोटोग्राफी की कला को अपनी हॉबी में शामिल कर लिया था। वह सच में एक ऐसी शख्सियत थे जिसमें सभी प्रकार के गुण शुमार थे- डॉक्टर, साहित्यकार और एक उच्च स्तर का जर्नलिस्ट फोटोग्राफर भी थे। केवल भारत में ही नहीं बल्कि डॉ. राव के नाम का डंका यूएसए, कनाडा व अन्य कई यूरोपीय देशों में था। पूर्वी यूरोप में यात्रा के दौरान कई यूरोपियन नेशनल फोटोग्राफी एसोसिएशन में उनका जाना हुआ। यहाँ वह पिक्टोरियल फोटोग्राफी पर कई चर्चाओं में शामिल हुए। पिक्टोरियल फोटोग्राफी में उनकी महाराथ को कई अंतरराष्ट्रीय फोटोग्राफी संघ मानते व सराहते हैं।

1958 के बाद से चार दशकों तक उन्होंने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय एग्जिबिशन में कई सर्टिफिकेट, मेडल, ट्रॉफी इत्यादि अपने नाम किए।

उनकी कुछ उपलब्धियाँ यह हैं-

- समाज में ग्रामीण मेडिकल चिकित्सक के रूप में उनकी सेवाओं को सराहते हुए कर्नाटक सरकार ने उन्हें **"स्टेट अवॉर्ड कर्नाटक राज्य परिषद"** से 1982 में नवाजा।
- 1996 में उम्दा लेखन और पिक्टोरियल फोटोग्राफरी के लिए उन्हें कर्नाटक ललित कला अकादमी **"प्रशस्ति"** से पुरस्कृत किया गया।

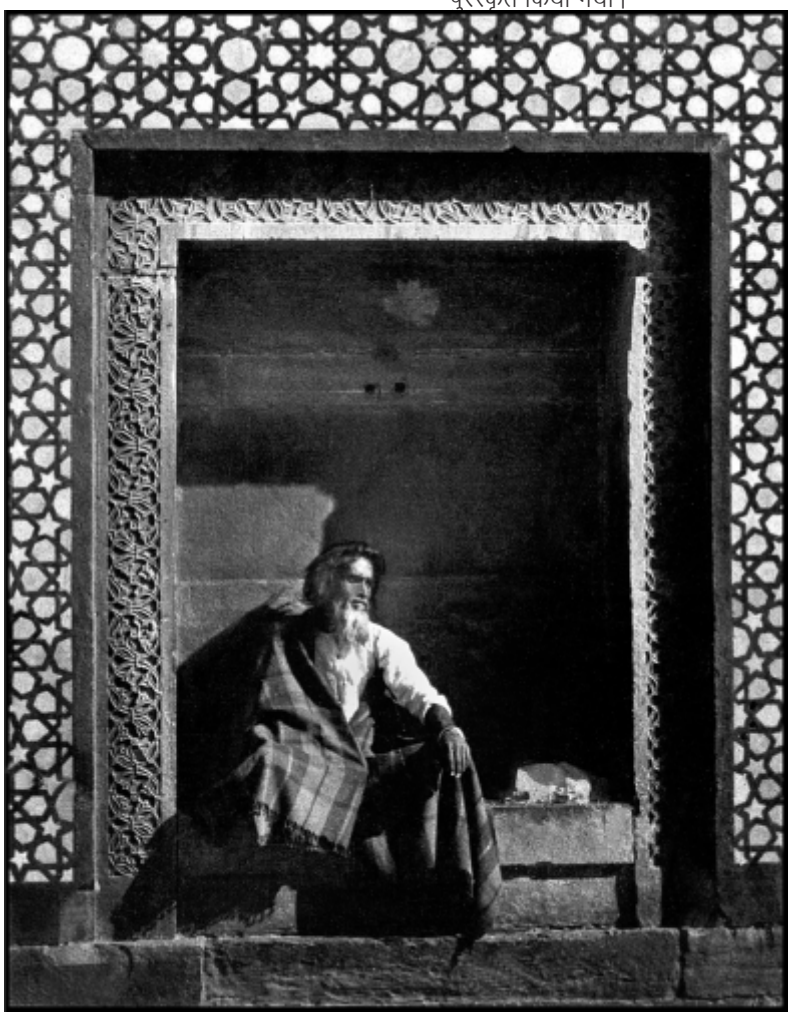

- कन्नड़ भाषा में पिक्टोरियल फोटोग्राफी पर **"बाहाभिव्यंजका छाया चित्रकला"** नामक किताब लिखने के लिए कर्नाटक साहित्य अकादमी ने उन्हें **"पुस्तका बहुमाना"** अवार्ड प्रदान किया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिताबों की सूची तो बेहद लंबी है जो उन्हें फोटोग्राफी के क्षेत्र में कार्य करने के लिए मिली है। 1958 में AFIAP, 1975 में APSA, 1977 में ESFIAP, 1980 में FPSA और Hon-EFIAP साल 1981 में।

उन्होंने FIP में बतौर डिस्टिंक्शन डिविजन के सचिव के रूप में अपनी सेवाएं कई वर्षों तक दी। मुझे उनका लेख **"FIAP डिस्टिंक्शन्स के प्रतिभागियों के लिए कुछ सुझाव"** आज तक याद है। यह सन 1986 के व्यूफांडर के जनवरी अंक में प्रकाशित हुआ था। इसमें उन्होंने तर्क के साथ बड़ी सरल तरह से FIAP में आवेदन करने के बारे में बताया था, और भी अन्य जानकारियां दी थी।

उनके सकारात्मक नजरिए के कारण लोग उनका सम्मान करते हैं। सन 1940 और 1950 के करीब कुछ ही लोग थे जो ब्लैक एंड वाइट फोटोग्राफी के विशेषज्ञ थे। उनमें भी बहुत ही कम लोग हैं जो अपना वर्षों का अर्जित किया हुआ ज्ञान बांट पाए। फेडरेशन ऑफ इंडियन फोटोग्राफी, एक राष्ट्रीय बॉडी जिसके संस्थापक डॉ जी थॉमस थे, एकमात्र ऐसा राष्ट्रीय स्तर का संगठन था जो कि युवा फोटोग्राफर्स व क्लब को स्पॉन्सर व प्रेरित करता था। चंद ही लोग ऐसे थे जो उस समय डॉ जी थॉमस के साथ खड़े रहे जिनमें एक नाम डॉ राव का भी है। दोनों ने मिलकर युवा फोटोग्राफर्स का मनोबल बढ़ाया और उन्हें आगे करने की हर संभव कोशिश की। उन्होंने कई फोटोग्राफी ऐसोसिएशन्स भी शुरू करवाईं।

अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर भी डॉ. राव नई पीढ़ी के छायाकारों को सिखाने में बहुत सक्रिय थे। वह बहुत बाद तक उत्सुक युवाओं को फोटोग्राफी की कला और विज्ञान का पाठ देते रहे। कुछ ही लोग हैं जिन्होंने मोनोक्रोम फोटोजर्नलिस्ट के तौर पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है, डॉ राव का नाम इसमें अव्वल है। जीवन भर विभिन्न क्षेत्रों में तन्मयता से अपनी सेवाएं देने के बाद वर्ष 2003 में उन्होंने देह त्याग दी।

अनिल रिसाल सिंह
MFIAP, ARPS, Hon. FIP, Hon. LCC, Hon. FSoF, Hon. FPAC, Hon. TPAS, Hon. FSAP, Hon. FICS, Hon. PESGSPC, Hon. FPSNJ
पूर्व अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन फोटोग्राफी

परफेक्शन के साथ प्रोट्रेट शूट

मुकेश श्रीवास्तव

FIE, FFIP, EFIAP

इंजीनियर, फोटोग्राफर, लेखक, पूर्व निदेशक (ई), भारत सरकार
निदेशक, सेण्टर फॉर विजुअल आर्ट्स
निकॉन मेण्टर (2015-2017) एवं अध्यक्ष, धनबाद कैमरा क्लब

पोट्रेट फोटोग्राफी यानी दुनिया को अपने लेंस के माध्यम से व्यक्ति की खूबसूरती को कैप्चर करना। आपको सबजेक्ट की पर्सनैलिटी, भाव, नजरिया, स्किल और खूबसूरती कैप्चर करनी है।

पोट्रेट के प्रकारः

सामान्य रूप से आप तमाम प्रकार के बैकग्राउंड के साथ अपने सब्जेक्ट को स्टूल पर बैठाकर ट्रेडिशनल पोट्रेट कैप्चर करते हैं। ट्रेडिशनल पोट्रेट के अलावा अन्य प्रकार के पोट्रेट भी होते हैं- जैसे कैजुअल, इन्वायरमेंटल, कैंडिड, ग्रुप, अरेंज/पोज़, ग्लैमर और फैमिली पोट्रेट काफी मशहूर हैं। किसी भी पोट्रेट शूट के लिए थोड़ा विचार करें, थोड़ी रचनात्मकता के साथ इन बातों पर गौर कीजिए-रोशनी की दिशा (आउटडोर), लाइटिंग सेट अप (इंडोर), चेहरे का शेप (गोल, ओवल, स्क्वायर, आदि) सब्जेक्ट का मूड और पोस्चर। हमेशा यह प्रयास करिए कि अन्य फोटोग्राफर्स से आप कुछ अलग और कुछ बेहतर कप्चर कर पाएं, ऐसे ही मार्केट में आपका ब्रांड बनेगा।

कैमरा सेट करिएः

Fig-1 का चार्ट सभी पोट्रेट फोटोग्राफी के लिए कैमरे की सही सेटिंग दिखाता है। एक्टिव डी-लाइटिंग फीचर जैसे एडवांस फीचर पौट्रेट को और अधिक प्रभावी बनाते हैं। सामान्यतः इन्हें बंद रखना चाहिए ताकि पोट्रेट में शैडो दिखे जिससे अच्छे डायमेंशन मिलते हैं। आप नॉर्मल, हाई, ऑटो फीचर चुन सकते हैं, यह इसपर निर्भर करता है कि आपको अधिक शैडो चाहिए या कम। सबकुछ आपकी रचनात्मकता पर निर्भर करता है।

Fig-1

सही अपर्चर (एफ वैल्यू) को सेट करना बहुत जरूरी है। जब आपको बैकग्राउंड में बोकेह इफेक्ट चाहिए तो 1.4, 2.8 आदि जैसी एफ वैल्यू सेलेक्ट कीजिए। सामान्य पोट्रेट के लिए एफ वैल्यू f/8 से f/11 के बीच में होनी चाहिए। मैं यह सुझाव दूंगा कि f/16 या f/22 जैसे अधिक एफ वैल्यू का प्रयोग न करें।

सही लेंस का चयनः

जैसा कि आप जानते हैं कि प्राइम लेंस आदर्श है, लेकिन आपकी रचनात्मकता के अनुसार दूसरे सामान्य जूम लेंस भी बेहद महत्वपूर्ण हैं। Fig-2 देखिए।

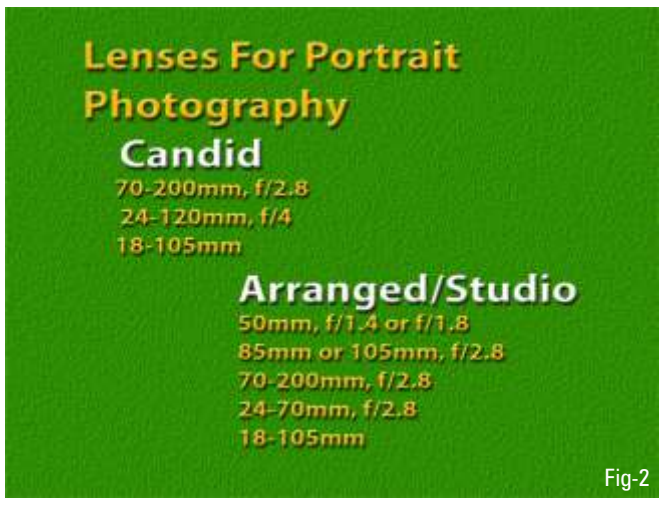

Fig-2

भाव :

जैसा कि आप जानते हैं कि आंखें बोलती हैं। इसलिए आंखों पर अधिक जोर दें और मिला जुला फोकस होठों पर भी दें। ज्यादातर आपको सब्जेक्ट के चेहरे पर भाव नहीं दिखेगा। मैंने वॉवेल (स्वर) यानी-A, E, I, O, U के साथ प्रयोग किया है। सब्जेक्ट को कहिए कि वह एक-एक कर वॉवेल बोले। और जो भी वॉव्ल के साथ भाव अच्छा लगे आप उसे चुनकर तब क्लिक करिए।

कैमरे के व्यूफाइंडर से आप भाव मिस कर सकते हैं। इसलिए मैं हमेशा सलाह देता हूँ कि ट्राइपॉड यूज़ करिए, ताकि जब सब्जेक्ट वॉवल से एक्सप्रेशन ला रहा हो तब आप सही लम्हा देखकर तुरंत क्लिक कर सकें। Fig-3 देखिए।

Fig-3

पोजिंग और लाइट के इस्तेमाल के लिए कान, नाक और बॉडी कॉन्ट्योर के आकार को देखें। Fig-4 देखिए।

Fig-4

आंखों और होठों के भाव के साथ तस्वीरें देखिए। (Fig-5, 6 और 7)

Fig-5

Fig-6

Fig-7

बैकग्राउंड में बोकेह कैसे मिले :

आप सबसे कम एफ वैल्यू जैसे 1.4, 2.8 और 5.6 तक का चयन करें। 80एमएम से अधिक फोकल लेंथ रखें। कैमरा व सब्जेक्ट के बीच न्यूनतम दूरी रखें। सब्जेक्ट और बैकग्राउंड के बीच अधिकतम दूरी रखें। Fig-8 देखिए।

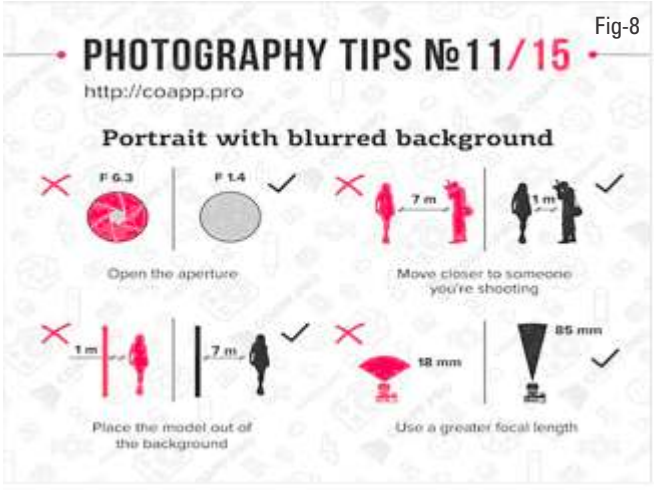

Fig-8

लाइटिंगः

लाइटिंग हल्की व कोमल होनी चाहिए। (स्टूडियो न्यूज के फरवरी अंक में मेरा लेख-केयर फॉर कैच लाइट जरूर पढ़िए) कोशिश कीजिए कि रिफ्लेक्टर या फिल लाइट से सॉफ्ट शैडो मिले। रिमब्रैंड्ट लाइटिंग पैटर्न पोट्रैट फोटोग्राफी में काफी चर्चित है। यह सच नहीं है कि केवल इंडोर लाइटिंग में आपको ऐसे पैटर्न मिलेंगे। आउटडोर में भी लाइट की दिशा को ध्यान में रखकर उसी अनुसार सब्जेक्ट के पोज को उसी तरह रखकर ऐसा

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019

जब मेरे हाथ में कैमरा होता है उस समय दुनिया की कोई बात मुझे नहीं डरा सकती। -- अल्फ्रेड आइसेनटाड

पैटर्न मिल सकता है। Fig-9 देखिए। Fig-10 व 11 में लाइटिंग चार्ट देखिए। रिमब्रैंड्ट लाइटिंग पैटर्न की इमेज Fig-12, 13 व 14 में देखिए। बटरफ्लाई लाइटिंग भी काफी मशहूर है।

Fig-9

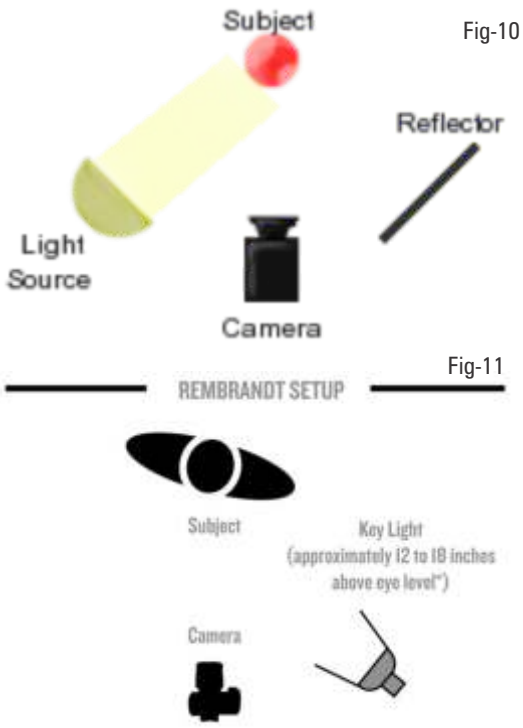

Fig-10

Fig-11

Fig-12 (Indoor)

Fig-13 (Indoor)

Fig-14 (Outdoor)

ट्रेडिशनल यानी पारंपरिक पोट्रेटः

Fig-15

इनवायरमेंटल पोट्रेट

Fig-16

इनवायरमेंटल पोट्रेट वह पोट्रेट हैं जो सब्जेक्ट के जीवन के अंदर तक ले जाते हैं। सब्जेक्ट ज्यादातर उस हॉबी में मशगूल हो जाता है जो उसे खासी पसंद है। देखने वालों को सब्जेक्ट के बारे में तस्वीरों से पता चल जाता है। फोटोजर्नलिस्ट एनवायरमेंट पोट्रेट खासतौर पर उन के लिए शूट करते हैं जो काफी मशहूर और दिलचस्प हस्तियां हैं। यह ब्लैक एंड वाइट में भी खूब चलती हैं।

कैंडिड पोट्रेट

Fig-17

पोट्रेट का एक बेहतरीन विकल्प है कैंडिड। इसमें सब्जेक्ट की सामान्य व्यवहार करते हुए तस्वीरे ली जाती हैं। जाहिर तौर पर यदि सब्जेक्ट फोटो क्लिक होने से अनभिज्ञ है तो उसकी वास्तविक हाव-भाव वाली फोटो कितनी लाजवाब आएगी। इसमें वाइड एंगल लेंस एवाइड करें और थोड़ी दूरी बनाकर टेलीफोटो यूज़ करें। कैमरे पर अपनी पैनी निगाह रखें और जैसे ही सही समय लगे तुरंत क्लिक करें।

फ्लैश जरूर ऑफ कर दें ताकि तस्वीर नैचुरल आए। अच्छी कैंडिड फोटोज़ अच्छे लम्हें ही नहीं बल्कि खूबसूरत पोज और लाजवाब भाव भी कैद करती हैं।

चिल्ड्रेन पोट्रेट

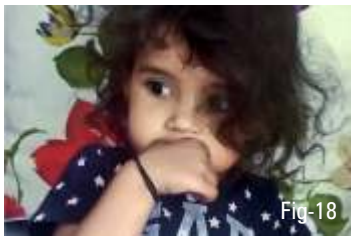
Fig-18

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं आप उनकी मासूमियत को तस्वीरों के माध्यम से जिंदगी भर सहेज सकते हैं। उनके बड़े होने के हर पड़ाव को कैप्चर कीजिए और आपके पास कुछ सालों बाद एक बेहतरीन रिकॉर्ड होगा जिसमें आपके बच्चों की हर स्टेज की तस्वीरे होंगी।

Fig-19

यदि नवजात का फोटो शूट करना हो तो बच्चे को कैमरे से कोई मतलब नहीं होता और अच्छी बात यह होती है कि वह कहीं इधर-उधर जा नहीं सकता। ऐसे में आपको केवल इतना ख्याल रखना है कि वह एक आराम की पोजिशन में हो।

थोड़े बड़े होते हैं तो बच्चों में शैतानी आ जाती है। ऐसे में ब्लर न आए इसलिए शटर स्पीड कम से कम 1/200 सेकेंड रखें। मैं यह सलाह दूंगा कि कैमरे को ए प्रियॉरिटी में रखें, अपर्चर खुला हो और शटर स्पीड 1/200 सेकेंड या उससे ज्यादा मेंटेन रखें। तीन साल से कम उम्र के बच्चों के फोटोशूट में फ्लैश कतई न इस्तेमाल करें, उनका रेटिना खराब हो सकता है।

पहले से निश्चित यानी अरेंज पोट्रेट

स्टूडिया या फिर प्री वेड शूट में आप पहले से सबकुछ अरेंज करते हैं और उसके बाद शूट करते हैं। यहां कॉस्ट्यूम, पोज़, बैकग्राउंड और लाइटिंग बहुत जरूरी है। रचनात्मकता दिखनी चाहिए और अच्छे नतीजों के लिए अपना बेस्ट दीजिए।

Fig 20, 21 शूट इंडोर व Fig- 22 शूट आउटडोर देखिए।

Fig-20

Fig-21

Fig-22

ग्लैमर पोट्रेट

ग्लैमर फोटोग्राफी की अगर बात करें तो आपको पहले ही लोकेशन, कॉस्ट्यूम और थीम सोच कर फाइनल कर देनी होगी। शूटिंग के दौरान पोज कुछ ऐसा हो कि शरीर के कर्व अच्छी तरह हाईलाइट हो। थीम के अनुसार भाव भी आने बेहद जरूरी हैं। Fig- 23, 24 और 25 देखिए।

Fig-23

Fig-24

Fig-25

फैमिली पोर्टफोलियो

Fig-26

यह आजकल काफी चर्चित है। जिस परिवार का पोर्टफोलियो शूट करना है उसके घर जाइए, परिवार के हर सदस्य से मुलाकात कीजिए और घर के अंदर हर लोकेशन को अच्छी तरह देख लीजिए। उसी हिसाब से यह प्लान करिए कि क्या शूट करना है और कहां शूट करना है। पारंपरित तरीके वाली ग्रुप फोटो को खींचने से जितना दूर रहें उतना अच्छा है। परिवार की असल दिनचर्या को शूट करिए तभी बात है। Fig-26 देखिए, यह मैंने आउटलुक मैगजीन के असाइनमेंट में कैप्चर की थी।

सीनकटर

'फोटोग्राफ' में दिखा नहीं फोटोग्राफर

त्रिलोचन एस. कालरा
वरिष्ठ फोटो पत्रकार
एवं
एमिटी विश्वविद्यालय के
पत्रकारिता विभाग में
असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी सिनेमा के जन्म में फोटोग्राफी का अहम रोल है। आँखों देखे दृश्यों को खींचने की चाहत इंसान में अगर पैदा न होती तो शायद कैमरे का आविष्कार ही नहीं होता। स्थिर चित्रों को कैद करने में सफलता मिली तो आविष्कारकों ने चलते फिरते दृश्यों को क़ैद करने में सफलता पायी जिससे गूंगी (मूक) फ़िल्में बनने की राह खुली, ऐसी फ़िल्में जिनमे एक्शन दृश्य तो होते थे किन्तु आवाज़ नहीं होती थी। बाद में अविष्कारकर्ताओं ने आवाज़ की कमी को दूर किया तो फिल्मों में ध्वनि रिकॉर्डिंग की सुविधा मिली फिर फिल्मों के किरदार बोलने लगे, धीरे-धीरे इनमें गीत-संगीत भी शामिल हो गया। संवादों के पार्श्व (बैकग्राउंड) में संगीत भी प्रयोग होने लगा। इन सुविधाओं के मिलने से फिल्मों में जीवंतता आ गयी। इसके बाद बॉलीवुड की फिल्मों ने ऐसी धूम मचाई जो आज तक जारी है। कैमरे ने विश्व भर के सिनेमा को यह सुविधा दी जिससे सिनेमा मनोरंजन के लिए मशहूर हो गया। फोटोग्राफी कला ने फिल्मों के विकास में जितना योगदान दिया उनमें खासकर हिंदी सिनेमा की बात करें तो सिनेमा ने फोटोग्राफी का यह अहसान हलके ढंग से चुकाया। कैमरे की तकनीक जैसे-जैसे उन्नत होती गयी वैसे-वैसे फिल्मकारों ने अपनी रचनात्मकता का बेहतर प्रदर्शन किया। किन्तु स्टिल फोटोग्राफी करने वाले फोटोग्राफर को कभी हिंदी सिनेमा में प्रमुख किरदार के रूप में नहीं दिखाया। खैर जितनी हिंदी फिल्मों में फोटोग्राफर को परदे पर दिखाया गया उनका जिक्र तो अगले अंक में करेंगे ही फिलहाल जिक्र कर रहे हैं मार्च 2019 में आयी रितेश बत्रा की फिल्म "फोटोग्राफ" का इसमें फोटोग्राफर बने हैं "नवाजुद्दीन सिद्दीकी"। फिल्म का नाम है तो "फोटोग्राफ" लेकिन फोटोग्राफर की लाइफ के संघर्ष को फिल्म उतना नहीं दिखा सकी जितना दिखा सकती थी। कहानी में फोटोग्राफर को एक पेशेवर रूप में सिर्फ थोड़ी देर के लिए ही दिखाया गया। यूँ समझ लें कि कहानी तो फोटोग्राफर को केंद्र में रख कर लिखी गयी किन्तु पटकथा के कम्पोजीशन में अन्य किस्से और किरदार शामिल हो गए जिससे फोटोग्राफर के संघर्ष की रील के वो अहम हिस्से कहीं दब से गए। खैर फिल्म का नाम ही फोटोग्राफ है, यही बहुत है। फिल्मों की पटकथा में अमूमन काफी रिसर्च होता है तब कहीं किरदार निकलते है। इनमे वक़्त भी काफी लगता है। लेकिन अब फ़िल्में तीन से छह महीने में बन जाती है लिहाज़ा उतना वर्क इस फिल्म पर नहीं हुआ। अगर सच में किसी फोटोग्राफर के नज़रिये से फिल्म की पटकथा में कुछ मदद ली जाती तो फिल्म कुछ और ही होती। फिल्म के निर्देशक रितेश बत्रा वास्तविक कहानियों पर फिल्म बनाने के लिए चर्चित है। अंतराष्ट्रीय फलक पर उनकी पहली सराहनीय फिल्म "लंच बॉक्स" थी। इसके छह साल बाद आयी फिल्म फोटोग्राफ उनकी ताज़ा फिल्म है। इसमें मुंबई के दो अजनबी लोगों के बीच पनपती प्रेम कथा है। फिल्म में नवाज़ "गेट वे ऑफ़ इंडिया" पर आने वाले टूरिस्टों की फोटो उतारते हैं और हाँथ में लिए फोटो अल्बम में लगे चित्रों को दिखाकर पर्यटकों को फोटो खिंचवाने के लिए मनाते है। यहीं पे उनकी मुलाक़ात अमीर घर की चाटर्ड एकाउन्टेंसी की पढ़ाई कर रही (मिलोनी) सान्या मल्होत्रा से होती है। नवाज़ इस फिल्म में रफीक नाम के फोटोग्राफर का किरदार निभाते हैं और गेट वे ऑफ़ इंडिया घूमने आयी मिलोनी को भी तस्वीर खिंचवाने के लिए मनाते है। जैसा अमूमन पर्यटक स्थल पर अक्सर फोटोग्राफर करते हैं। मिलोनी अनसुना कर देती है तो रफीक कम पैसे में तस्वीर खींचने का प्रस्ताव देता तो वह तैयार हो जाती है। फोटो खिंच जाने के बाद रफीक अपने बैग से एक पोर्टेबल फोटो प्रिंटर निकल कर मेमोरी कार्ड लगाकर झटपट उसको तस्वीर प्रिंट करके दे देते हैं, फिर जब तक वो प्रिंटर रख कर ऊपर देखते है तो मिलोनी बिना पैसे दिए जा चुकी होती है। हाँथ में निकॉन का कैमरा लिए रफीक पैसे न मिलने से दुखी है। लेकिन मिलोनी अपनी खुशहाल मूड की तस्वीर देख के खुश है। मुंबई की भागमभाग भरी ज़िंदगी में खुशी तलाशने आयी मिलोनी की ज़िंदगी तन्हा है, दूसरी तरफ रफ़ीक़ भी तन्हा है। मिलोनी की ज़िंदगी में पढ़ाई के चलते उसके दोस्त न के बराबर है और घरवालों से उसकी सिर्फ काम भर की ही बातचीत होती है, घरवाले उसकी शादी की बात कर रहे हैं। रफीक और मिलोनी के परिवारों के हालात और जीवनशैली अलग है। लेकिन तन्हा दोनों है। इधर रफीक की दादी उसका निकाह करने का दबाव बना रही है। रफ़ीक़ का धंधा कभी मंदा तो कभी तेज़ चलता है, चार दोस्तों के साथ वो एक छोटी सी खोली में रहता है। यहाँ उसकी रोज़ी रोटी के झंझटों के बीच में भी हंसी मज़ाक चलता है। दादी जब निकाह के लिए लड़की ढूंढने के लिए दबाव बनती है तो रफीक मिलोनी की फोटो भेज देता है। बस यही से फिल्म फोटोग्राफ की कहानी फोटोग्राफी के ट्रैक से हटकर प्यार और शादी का ट्रैक पकड़ लेती है तो फोटोग्राफर का किरदार बस एक तरफ रह जाता है। रफ़ीक़ मिलोनी से मिलने के पहले सीन में ही कैमरे के साथ दिखे और दोबारा तब दिखे जब वे मिलोनी को अपनी दादी से मिलने के लिए राज़ी कर लेते है तो मुंबई आयी दादी रफीक और मिलोनी की फोटो एक साथ खिंचवाने के लिए ज़ोर देती है। फिर फिल्म में और किस्से कहानी शामिल होते गए तो पौने दो घंटे की फिल्म में बतौर फोटोग्राफर नवाज़ उतना नज़र नहीं आ सके जितना आना चाहिए था। इस फिल्म में फोटोग्राफर को जिस तरह से दिखाया गया उसे इस तरह से समझें जैसे किसी इंसान का पोर्ट्रेट फोटो जिसमे चेहरा तो नज़र आता है लेकिन पूरा किरदार छुप जाता है। इसमें फोटोग्राफ के लिए अक्सर प्रयोग की जाने वाली उपमा दब जाती है कि एक फोटो हज़ार शब्दों के बराबर होती है। असल में एक फोटोग्राफर की ज़िंदगी में भी कई हज़ार शब्दों की कहानियाँ भरी होती है। लेकिन जब वो कोई फोटो खींचता है तो कहा जाता है कि फोटोग्राफ हज़ार शब्दों को बयां करती है। फिलहाल फिल्म में एक स्टिल फोटोग्राफर के संघर्ष और रचनात्मक पहलू को जितने हज़ार शब्दों के भावों में दिखाना चाहिए था वो मिस हो गए। लेकिन नवाज़ ने जिस तरह से कैमरा पकड़ा और फोटो लेते दिखे और जिस तरह वे प्रिंटर से मौके पर ही तस्वीर प्रिंट करते दिखे वैसा ही टूरिस्ट प्लेस पर वास्तविक फोटोग्राफर करते दिखते हैं। अगर निर्देशक एक फोटोग्राफर के अंतर्मन को अगर पढ़ लेते तो ये फिल्म और अच्छी बन जाती अगर अनावस्यक किस्से शामिल न किए जाते। सीन कटर के अगले अंक में हम और ऐसी फिल्मों का ज़िक्र करेंगे जिनमे फोटोग्राफर को थोड़ी देर के लिए ही सही लेकिन अच्छी तरह दिखाया गया है भले ही वो स्टूडियो फोटोग्राफी से जुड़े हो या फोटो पत्रकारिता से। जारी ...

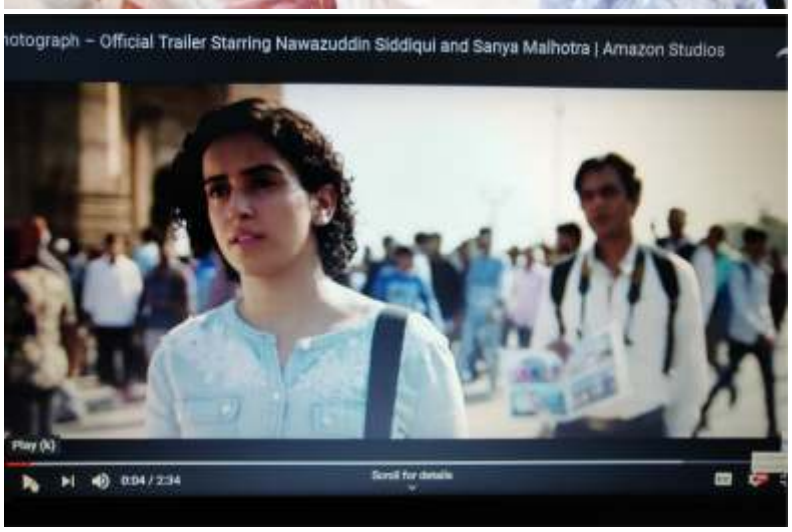

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019

फोटोग्राफी सिर्फ सच ही नहीं दिखाता बल्कि उस सच के बारे में आपकी राय भी प्रदर्शित करता है। - आरोन सिसकिंड

गुज़रा हुआ ज़माना आता नहीं दोबारा ....

बड़ी सफलता पाने के लिए खुद को क्या करना पड़ेगा? इसी फलसफे को बताता आनन्द कृष्ण लाल का आलेख

जी हाँ हम सब जानते हैं कि बीता हुआ समय लौट कर नहीं आता। इंसान के जीवन में चलते हुए समय के साथ साथ अवसर आते हैं। अवसर कभी बता कर नहीं आते, और यदि समय रहते अवसर को पहचान कर फायदा नहीं उठाया तो समय के साथ-साथ अवसर चले भी जाते हैं। हर इंसान के जीवन में कभी-कभी ऐसे अवसर अवश्य आते हैं जो उसका जीवन बदल सकते हैं। हम सबने अक्सर अनेक लोगों को यह कहते सुना है कि "हमें जिंदगी में कुछ करने का मौका ही नहीं मिला, वर्ना हम बहुत कुछ कर के दिखा सकते थे।" आपको अपने आस-पास भी बहुत से लोग ऐसे मिलेंगे जो अपनी असफलता का दोष अपने समय या परिस्थितियों के सर पर मढ़ देते हैं। और अपने आप को दुनिया से बचाने के लिए ऐसा बहाना बनाते हैं। जिससे कोई उन्हें कुछ कह न सके। आइये एक कहानी से समझने की कोशिश करते हैं कि अवसर या मौका कैसे आता है और चला जाता है।

एक बार कि बात है कि एक ग्राहक तस्वीरों की बड़ी दुकान पर गया। उसने बड़े ध्यान से वहां हर तरफ दीवारों पर लगे हुए चित्र देखे। देखते-देखते अचानक उसकी नज़र अगल-बगल लगी दो तस्वीरों पर टिक गयी, क्यूंकि वो दो चित्र उसे बड़े अजीब से लगे। पहले में एक इंसानी आकृति का चेहरा पूरी तरह बालों से ढंका हुआ था और पैरों में पंख थे। दूसरे चित्र में वैसी ही आकृति थी जिसका सिर पीछे से गंजा था। ग्राहक दूकानदार के पास गया और उत्सुकता में दुकानदार से पूछ लिया कि ये चित्र किसके हैं? दुकानदार ने जवाब दिया, ये दोनों तस्वीरें 'मौका' यानी 'अवसर' की हैं। उस ग्राहक को फिर भी कुछ समझ नहीं आया तो उसने दुकानदार से पूछा "कैसे?" इनमें तो कुछ समझ नहीं आ रहा। यह सुनकर दुकानदार मुस्कुराया फिर उसने जो जवाब दिया, वो बहुत बढ़िया था।

दुकानदार ने ग्राहक से कहा, पहली तस्वीर में चेहरा बालों से ढंका है, क्योंकि जब भी कोई अवसर या मौका आता है तो इन्सान उसे पहचानता नहीं है और पंख इसलिए लगे हैं कि यदि मौके का फायदा न उठाया जाए तो वह तुरंत भाग जाता है।

दुकानदार ने आगे दूसरी तस्वीर के बारे में कहा कि दूसरे चित्र में जो गंजा सिर है, वो भी अवसर का है। यदि अवसर को सामने से बालों से पकड़ लेंगे तो वह आपका है। अगर आपने उसे पकड़ने में देरी कर दी तो पीछे का गंजा सिर हाथ आएगा और वो फिसलकर निकल जाएगा। उस ग्राहक को उसके दुकानदार से सवाल का जवाब मिल चुका था और वह जिंदगी का एक बड़ा सबक सीखकर वहां से लौटा।

हर व्यक्ति के जीवन में सुनहरे अवसर आते ही आते हैं और वो भी पूरे जीवन में दो से तीन बार शायद। ज़रूरत है उस अवसर या मौके को पहचान कर उसी दिशा में कार्य शुरू किया जाये। लेकिन अक्सर व्यक्ति कुछ अलग-अलग बातों में या परिस्थितियों में उलझे रहते हैं, और सामने खड़े अवसर को पहचान नहीं पाते हैं और कुछ ही समय में वो अवसर उनसे दूर चला जाता है। बाद में समझ में आने से कुछ नहीं हो सकता क्यूंकि आकर गया हुआ समय और अवसर दोबारा नहीं आ सकता। सामने आए अवसर को पहचानने के लिए ज़रूरी है कि आप अपने अंदर एक इक्षाशक्ति रखें और ये उम्मीद रखें कि आपके सामने भी कहीं न कहीं एक ऐसा अवसर आएगा जो आपकी ज़िंदगी बदल देगा। अपने सामने आने वाले हर अवसर को ज़रा ध्यान देकर सोचें कि कहीं ये ही तो वो अवसर नहीं जो मेरी ज़िंदगी को सर से पाँव तक बदल कर रख देगा। ये बात भी सच है कि कई बार कुछ कठिन परिस्थियों के चलते सामने दिख रहे अवसर का लाभ हम नहीं उठा पाते। ऐसी स्थिति में भी हमको मानसिक रूप से अपने को मज़बूत बनाये रखते हुए कुछ निर्णय लेने पड़ सकते हैं। सही समय पर लिया गया सही निर्णय आपको सही व विशिष्ट जगह पर पंहुचा सकता है। अंग्रेजी में एक कहावत है "Man who loses opportunity, loses himself" साथ ही अगर आप ईश्वर को मानते हैं तो उसके बारे में एक कहावत और है "God help those, who help themselves"। तो दोस्तों देखिये कि कहीं आपने भी कोई मौका गवां तो नहीं दिया और आने वाले समय में ज़िंदगी आपको कुछ और मौका तो नहीं देना चाहती?" ज़िन्दगी को दोष देते हुऐ, समय को अपने अनुकूल ना बताते हुए असंतुष्ट जीवन जीने का कोई मतलब नहीं है। आगे बढ़िये और जीवन बदल देने वाले 'अवसर' को तलाश करिये और पहचानिये तभी जीवन का सच्चा आनन्द आयेगा।

स्टूडियो न्यूज

तिमाही फोटो प्रतियोगिता

फोटोग्राफी में अपना नाम और पहचान बनाने के साथ-साथ उपहार पाने और स्टूडियो न्यूज में प्रकाशित होने का मौका। उठाइये अपना कैमरा, रचनात्मक तस्वीरें खींचे और हमें भेजें।

नियम :
1. फोटो केवल डिजिटल रूप में भेजनी है। फाईल का फार्मेट JPEG होना चाहिए।
2. फोटो कलर या B/W कोई भी हो सकती है।
3. फोटो का साइज 8x10 इंच में एवं 300 dpi की होनी चाहिए।
4. फोटो के ऊपर कोई वाटर मार्क या नाम नहीं लिखा होना चाहिए।
5. कम्पटीशन में अधिकतम 2 फोटो ही भेज सकते हैं।
6. प्रतिभागी अपनी फोटो के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा। किसी दूसरे की फोटो होने पर स्टूडियो न्यूज जिम्मेदार नहीं होगा।
7. फोटोग्राफर अपनी पासपोर्ट साइज फोटो, पूरा पता एवं फोन नम्बर अवश्य भेजें अन्यथा उनकी फोटो प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जायेगी।

प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि
28 अप्रैल 2019

निर्णायक दल

वरिष्ठ छायाकार
अनिल रिसाल सिंह

आर्ट्स कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल
जयकृष्ण अग्रवाल

फोटो infostudionewsup@gmail.com पर मेल करें।

हर तिमाही जीतिए

जेसीएम सर्किट 2019

जेसीएम सर्किट 2019 का आयोजन जेसीएम फोटोग्राफिक सोसाइटी द्वारा पीएसए, एफआइएपी, एफआइपी, जीपीयू व डब्लूपीएआइ के संरक्षण में हुआ। धनबाद में 30 व 31 मार्च को तीन सर्किट के लिए निर्णय लिए गए- धनबाद कैमरा क्लब, लेक सिटी व जिम कॉर्बेट। धनबाद कैमरा क्लब ने यह पूरा सेशन आयोजित किया। 78 देशों से फोटोग्राफर्स ने अपनी एंट्री भेजी। डिजिटल फोटो प्रतियोगिता में कुल 5048 एंट्री आईं और 3864 प्रिंट में प्राप्त हुईं। डिजिटल इमेज के निर्णय 30 मार्च को व प्रिंट के 31 मार्च को लिए गए।

निर्णायक मंडली के सदस्य-

लखनऊ से **अनिल रिसाल सिंह**, कोलकाता से **अमिताभ सिल**, धनबाद से **मुकेश श्रीवास्तव**, इंदौर से **अखिल हर्दिया**, कोलकाता से **एस.आर. मंडल**, इंदौर से **पद्माकर गाडे,** कोलकाता से **संजय भट्टाचार्य**, कोलकाता से **तुहिन कांति दास** एवं दिल्ली से **चित्रांगद कुमार**।

प्रत्येक कैटेगरी में 29 अवॉर्ड थे। डिजिटल सेक्शन में तीन कैटेगरी थीं- ओपेन मोनो, ओपेन कलर और नेचर। कुल मिलाकर 255 अवॉर्ड घोषित किए गए।

प्रिंट सेक्शन की कैटेगरी थीं- ओपेन मोनो व ओपेन कलर। 175 अवार्ड की घोषणा हुई।

पीएसए गोल्डअवॉर्ड विजेता-

डिजिटल सेक्शन-

ए.एन. जिंग (चाइना); मजूमदार दुरबा (भारत); लू जिंग्रू (यूएसए); हुंग युक फुंग गारियुस (हॉन्ग कॉन्ग); विला हरमैन मैनुइल (अर्जेंटिना); बैंड्रा पन्ड्यूला (श्रीलंका); चैंग यूइन चू (ताइवान); टैन लव्व इंग (सिंगापुर); कैडिंग वॉल्फगैंग (जर्मनी)

फोटो : दुरबा मजूमदार (भारत)

फोटो : लू जिंग्रू (यूएसए)

Camera Care

Drone and Camera service center

Authorized Service and Collection Center

JVC TAMRON PHOTOQUIP

Our Services

• Service and Repair • Spare Parts and Accessories • Sale and Purchase Second Hand Cameras

dji SONY Nikon Canon Kodak FUJIFILM Panasonic SIGMA SAMSUNG

UGF-F3, Surya Market, Ganeshganj, Aminabad Road, Lucknow - 226018. Ph: 0522-4045174, 9335026968.

Timing 10:30 am to 8:30 pm

Thursday Closed

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019

एक फोटोग्राफ सच्चाई का चरम है क्योंकि तस्वीरें कभी झूठ नहीं बोलती। - मलिक सिदिबे

एक प्रो-फोटोग्राफर सस्ते एंड्रॉइड फोन कैमरे के साथ क्या कर सकता है

Pics : Atul Hundoo

स्मार्टफोन फोटोग्राफी को पॉपुलर बनाने के लिए काम कर रहे वरिष्ठ छायाकार **अतुल हुंडू** बता रहे हैं कि सस्ते फोन कैमरा से भी कैसे बेहतर आउटपुट लिया जा सकता है।

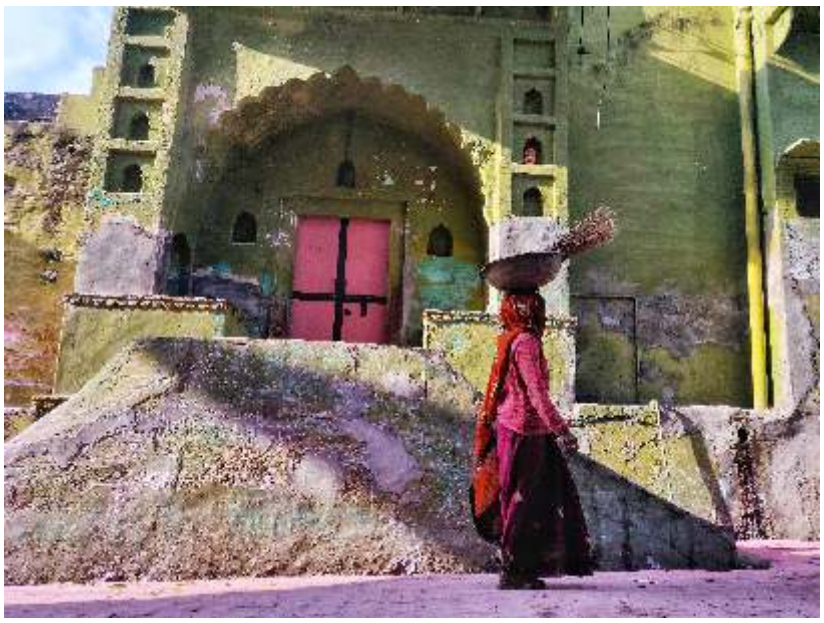

फ़ोन फोटोग्राफी के शौक़ीन चाहते हैं कि उनके पास सबसे बढ़िया कैमरा फ़ोन हो। लेकिन फोटोग्राफी मेंटर यह भी कहते है कि एक अच्छा फोटोग्राफर किसी भी कैमरे के साथ अद्भुत शॉट ले सकता है। फ़ोन फोटोग्राफी के सन्दर्भ में आइए जाने की यह कितना सच है? एक अच्छा प्रोफेशनल फोटोग्राफर एक बेसिक फ़ोन कैमरे के साथ क्या कर सकता है?

उम्दा तस्वीर किसे कहते है?

एक उम्दा तस्वीर में महत्वपूर्ण एलिमेंट है उसमे इमोशन जगाने की क्षमता, जो कहानी कहे, सब्जेक्ट को अच्छी तरह से एक्सप्लेन करे। इसके अलावा कम्पोजीशन, प्रकाश व्यवस्था और फोटोग्राफर की स्टाइल कुछ ऐसी चीजें हैं, जिन्हें सीन को फ्रेम करते समय फ़ोटोग्राफ़र को दिमाग में रखना चाहिए है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात है की यहाँ मैंने सेंसर साइज, फैंसी लेंस और महंगी असेसरीस का ज़िक्र नहीं किया है। ऐसा नहीं है कि इंस्ट्रूमेंट की महत्ता नहीं है लेकिन समझदार फोटोग्राफर इंस्ट्रूमेंट्स को सेकेंडरी मानते हैं। महंगे और सोफेस्टिकेटेड इंस्ट्रूमेंट स्वचालित रूप से आपकी

फोटोग्राफी को अद्भुत नहीं बना सकते, लेकिन यह आपके बढ़िया फ्रेम को टेक्निकली और बेहतर बना सकते हैं।

बहुत से प्रोफेशनल्स शूट में महंगे फैंसी लाइट्स का प्रयोग करते हैं लेकिन अच्छी रोशनी क्रिएट करने के लिए आपको इसकी हमेशा जरूरत नहीं है। चुनी हुई लोकेशन पर सब्जेक्ट को दिलचस्प बैकग्राउंड के साथ (जैसे कोई दीवार) फ्रेम किया जा सकता है। सुबह या शाम की सॉफ्ट अवेलेबल लाइट में साधारण सिल्वर रिफ्लेक्टर द्वारा लाइट को सब्जेक्ट पर रिफ्लेक्ट करके आँखों में कैच लाइट और बढ़िया ड्रामा क्रिएट किया जा सकता है।

संक्षेप में, आइडियल सिचुएशन वह है जिसमें फोटोग्राफी के बेसिक रूल्स व टेक्नोलॉजी का सर्वोत्तम प्रयोग होता है। यदि वह तकनीक एक बुनियादी स्मार्टफोन कैमरा है, तो आप उसे ऑप्टिमम लेवल तक ले जा कर बढ़िया तस्वीर बना सकते हैं।

आपका कैमरा शायद आपकी ख़राब तस्वीरों के लिए जिम्मेदार नहीं है। कैमरा को सामने करके सिर्फ बटन दबा देने भर से एक शानदार तस्वीर नहीं बन जाती।

हर मोबाइल ब्रांड के कैमरा की बनावट अलग होती है, कुछ निश्चित रूप से बेहतर होते हैं। बेहतर तकनीक वाले फोन की कीमत भी अधिक होती है। यहाँ दिख रही तस्वीरें इस बात को साबित करने के लिए काफी है की एक एवरेज स्मार्टफोन भी बेहतर कम्पोजीशन वाली क्रिएटिव तस्वीरें ले सकता है उसके लिए हमेशा महंगे कैमरा फ़ोन की आवश्यकता नहीं है।

क्वाड कैमरा के साथ हुआवे P30 प्रो

जब पिछले हफ्ते हुआवे P30 प्रो को पेरिस में लॉन्च किया गया, तो फोन फोटोग्राफरों के बीच उसका क्वाड कैमरा सेटअप चर्चा का केंद्र बन गया। इस क्वाड कैमरा सेटअप में एक 40 मेगापिक्सेल का मुख्य लेंस, 20 मेगापिक्सल का वाइड एंगल लेंस और 8 मेगापिक्सेल का 5X आप्टिकल जूम (10 एक्स हाइब्रिड जूम) क्षमता का टेलीफोटो लेंस लगा है जिसका अपर्चर f/3.4 है। 40 मेगापिक्सेल कैमरा सोनी के सहयोग से फिर से डिज़ाइन किया गया है और इसमें RGB पिक्सल की जगह RYB पिक्सेल है। मतलब हरे रंग के पिक्सल को पीले रंग के पिक्सल से बदल दिया गया है। कंपनी का दावा है कि सेंसर या एपर्चर के आकार को बदले बिना RYB सेंसर की वजह से कैमरे में 40þ अधिक प्रकाश संग्रह होता है। सभी 3 लेंस लाइका ने डिज़ाइन किये है और सभी में ऑप्टिकल सटैबलाइजेशन मौजूद है। आज के समय P 30 प्रो कम रौशनी में सबसे बढ़िया तस्वीरें लेने वाला फ़ोन है।

टाइम आफ फ़्लाइट कैमरा :

टाइम ऑफ़ फ़्लाइट कैमरा फ़ीचर में लेज़र बीम की मदद से डेप्थ इन्फ़र्मेशन कलेक्ट की जाती है। यह टेक्नॉलजी इस्तेमाल हो रही अन्य टेक्नॉलजी से ज़्यादा सटीक और सस्ती है। इसके बहुत से फ़ायदे भी है। हुआवे P30 प्रो के अलावा सैमसंग S10, ओप्पो RX17प्रो, LG G8 थिंक, ऑनर P20 आदि फ़ोन में यह टेक्नॉलजी मौजूद है। ऐप्पल इस तकनीक पर तेज़ी से काम कर रहा है।

कौसानी में बुरांश रिट्रीट द्वारा पांचवी हिमालयन लैंडस्केप कार्यशाला

प्रथम बैच

द्वितीय बैच

फैक्ल्टी : श्रीश कपूर, अनिल रिसाल सिंह, बी.के. अग्रवाल, राजेन्द्र प्रसाद, मुकेश श्रीवास्तव

फैक्ल्टी : गुरदास गुहा प्रोडक्ट फोटोग्राफी के बारे में बताते हुए

फोटोशूट करते हुए प्रतिभागी

इस वर्ष बुरांश रिट्रीट ने कौसानी में लगातार दो कार्यशाला लैंडस्केप फोटोग्राफी में आयोजित की। 24 से 28 फरवरी को पहली कार्यशाला और दूसरी 28 फरवरी से 4 मार्च, 2019 तक। तीन माह पहले जब सोशल मीडिया पर बुरांश लैंडस्केप कार्यशाला की जानकारी घोषित हुई तब मात्र दो दिनों में 100 से भी अधिक आवेदन आए। अधिकतम आवेदकों को कार्यशाला में हिस्सा लेने का अवसर मिले इसलिए दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

पहली कार्यशाला के लिए देश के हर कोने से 42 प्रतिभागी तय हुए और दूसरी के लिए 54 प्रतिभागी। उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, गुजरात, आंध्र प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र और उत्तराखंड आदि जगहों से लोगों ने हिस्सा लिया।

लैंडस्केप संकाय में लखनऊ से अनिल रिसाल सिंह और बुरांश, कौसानी के डायरेक्टर श्रीश कपूर थे। कुछ कारणवश पद्मश्री अनूप साह उपस्थित नहीं हो सके। इंडोर पोट्रेचर के लिए विशाखापटनम से बी. के. अग्रवाल, प्रोडक्ट फोटोग्राफी के लिए इंदौर से गुरदास दुआ, फोटोशॉप के लिए मुजफ्फरपुर से राजेंद्र प्रसाद और आउटडोर क्रिएटिव पोट्रेचर के लिए धनबाद से मुकेश श्रीवास्तव पधारे और उन सभी ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करने के साथ-साथ अपने अनुभव साझा किए व इस क्षेत्र का ज्ञान भी बांटा।

कार्यशाल के दौरान हमने मौसम के कई आयाम देखे। मिस्टी मौसम, साफ मौसम, गुनगुनी धूप, बारिश और बर्फ भी। लैंडस्केप फोटोग्राफी के लिए अलग-अलग लोकेशंस की प्रत्येक बैच के लिए तीन-तीन आउटिंग रखी गईं थी। यह स्थान फैकल्टी द्वारा पहले ही चिन्हित कर लिए गए थे। प्रतिभागियों ने शूटिंग में काफी मजे किए और लोकेशन्स व लाइट कंडीशन्स से वह काफी प्रसन्न थे।

दो अलग-अलग फोटो प्रतियोगिताएं- दोनों बैच के लिए आयोजित की गई। फोटो प्रतियोगिता बुरांश कैंपस व फोटो प्रतियोगिता कार्यशाला आउटिंग थी। इन प्रतियोगिताओं की जजिंग अनिल रिसाल सिंह ने की।

फैक्ल्टी : अनिल रिसार सिंह, बी.के. अग्रवाल, राजेन्द्र प्रसाद, मुकेश श्रीवास्तव

पहले बैच के विजेता

कार्यशाला आउटिंग की फोटो प्रतियोगिता

प्रथम - शुवाशीष साहा, **द्वितीय** - सुशांता बर्मन, **तृतीय** - तनवीर अहमद खान, **सांत्वना** -आशीष अवस्थी, डॉ एके सिन्हा

बुरांश कैंपस की फोटो प्रतियोगिता

प्रथम - मुकुल मुखर्जी, **द्वितीय -** बिपिन क्रिस्टियन

कार्यशाला आउटिंग प्रथम - शुवाशीष साहा

बुरांश कैम्पस प्रथम - मुकुल मुखर्जी

दूसरे बैच के विजेता

कार्यशाला आउटिंग के लिए फोटो प्रतियोगिता

प्रथम - हिमांशु जोशी, **द्वितीय -** प्रदीप पांडेय, **तृतीय -** कौशल कुमार, **सांत्वना -** अंकित पोरवाल और अतुल हुंडू

बुरांश कैंपस के लिए फोटो प्रतियोगिता

प्रथम - गौतम अग्रवाल, **द्वितीय -** स्मिता श्रीवास्तव, **तृतीय -** अंकित पॉरवाल, **सांत्वना -** किशन चंद और कौशल कुमार

कार्यशाला आउटिंग प्रथम - हिमांशु जोशी

बुरांश कैम्पस प्रथम - गौतम अग्रवाल

STUDIO NEWS
लखनऊ, शनिवार, 6 अप्रैल 2019 से 5 मई 2019

चित्रकला वास्तव में व्यवसाय नहीं है। यह तो मन के आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। - रघु राय

मथुरा और वृंदावन की होली है खास

- अतुल हुंडू
वरिष्ठ छायाकार

Pic : Abhishek Verma

मथुरा, वृन्दावन की होली को तस्वीरों में कैद करने के लिए देश-विदेश से होली के समय फोटोग्राफरों और सैलानियों की भारी भीड़ उमड़ती है। देश के अन्य स्थानों से इतर, इस इलाके में लड्डुओं और फूलों के अलावा लठ्ठमार होली खेलने का भी रिवाज़ है। राधा और कृष्ण से जुडे सभी मंदिरों में इस तरह के आयोजन होते हैं। यहाँ की होली विश्व प्रसिद्ध है और इसी वजह से यह देसी-विदेशी फोटोग्राफरों के आकर्षण का केंद्र है। हर साल हफ्ता भर चलने वाले इस आयोजन की तस्वीरें लेने के लिए फोटोग्राफरों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। सोशल मीडिया पर फोटोग्राफरों द्वारा पोस्ट की जाने तस्वीरें हर साल नए फोटोग्राफरों को यहाँ आने के लिए प्रेरित करती हैं। अगर आप भी अगले साल इस आयोजन की तस्वीरें लेना चाहते है तो आप के लिए कुछ खास बाते जानना ज़रूरी हैं।

1. कैमरा व अन्य उपकरणों की सुरक्षा - अगर आप यहाँ मंदिरों या गली मोहल्लों में होली की तस्वीरें लेना चाहते है तो आप के कैमरा की सुरक्षा के लिए रेन कवर ज़रूरी है। अन्यथा आप का कैमरा पानी या गुलाल से ख़राब भी हो सकता है। आप ट्रांसपरेंट पॉलिथीन और टेप का प्रयोग कर के कैमरा को सुरक्षित रख सकते हैं। ध्यान रहे कवरेज के दौरान लेंस चेंज करना संभव नहीं होता। ऐसी कोई भी कोशिश न करें। अगर आप एक ही कैमरा बॉडी के साथ ट्रेवल कर रहे है तो फिक्स फोकल लेंथ के लेंस लेंस की जगह ज़ूम ज़्यादा बेहतर रहेगा। लेंस के फ्रंट एलिमेंट को बार-बार साफ़ करने की ज़रूरत पड़ सकती है। साफ़ मुलायम कपड़ों के टुकड़े या पेपर नैपकिन हमेशा साथ रखें। पहले पहुंच कर आप मंदिरों या घरों की छत से भी बढ़िया तस्वीरें ले सकते हैं या फिर आयोजन स्थल के पास जा कर भी कवर सकते हैं लेकिन अपने कैमरा को अच्छी तरह से कवर करने के बाद। रेन कवर या पॉलिथीन से लेंस को कवर करने के बाद लेंस ज़ूमिंग मुश्किल हो जाती है और कई बार व्यू फाइंडर से देख पाना मुश्किल हो जाता है। उपकारों की सुरक्षा का ख्याल रखें।

2. खास आयोजन - वृंदावन की होली, बरसाने की लट्ठमार होली, विधवाओं की होली, लड्डू व फूलों की होली, होलिका दहन में पण्डे का आग से निकलना, दाऊजी मंदिर होली के एक दिन बाद आयोजित होने वाला होली का कार्यक्रम व अन्य प्रमुख मंदिरों में आयोजित होने वाली होली फोटोग्राफरों के लिए मुख्य आकर्षण हैं। जहाँ एक तरफ बरसाने की लट्ठमार होली, जिसमें पुरूष थालनुमा ढाल व पगड़ी से गुजरियों द्वारा अपने पर होने वाले लट्ठों के मार से बचते है वही दूसरी दाऊजी मंदिर में होली के दूसरे दिन कपडे के कोडे बनाकर ग्वालबालों पर गोपियां वार करती हैं। होली का मजा यहीं लिया जा सकता है।

3. गो-प्रो, मोबाइल व मोबाइल कैमरा से बेहतरीन वीडियो और तस्वीरें लेना संभव है।

4. अच्छी तस्वीरें लेने के लिए सही समय पर सही जगह मौजूद होना ज़रूरी है। मंदिरों में ज़्यादातर आयोजन दोपहर के बाद होते हैं। इससे पहले का समय गलियों में चल रही होली की बढ़िया तस्वीरें लेने के लिए किया जा सकता है।

5. रहने के लिए बहुत सी धर्मशालाए और सस्ते होटल यहाँ उपलब्ध है लेकिन होली के समय यहाँ उमड़ने वाली भीड़ की वजह से पहले व्यवस्था कर लेना बेहतर है।

इसके अलावा राजस्थान के कुछ शहरों जैसे पुष्कर, जोधपुर और पंजाब में आनंदपुर साहब में होला मोहल्ला आदि होली में होने वाले आयोजन फोटोग्राफरों में लोकप्रिय हो रहे हैं।

Pic : Abhishek Verma

Pic : Atul Hundoo

Pic : Yuvraj Shukla

Pic : Yuvraj Shukla

Pic : Atul Hundoo

Pic : Abhishek Verma

Pic : Atul Hundoo

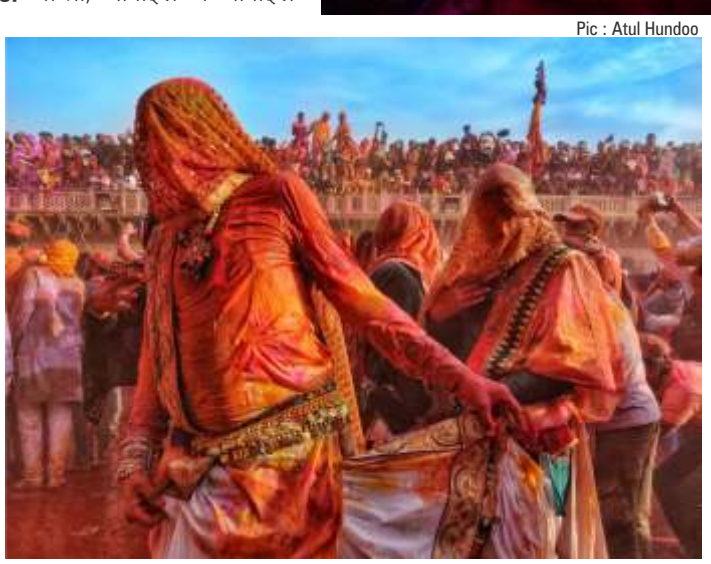

Pic : Yuvraj Shukla

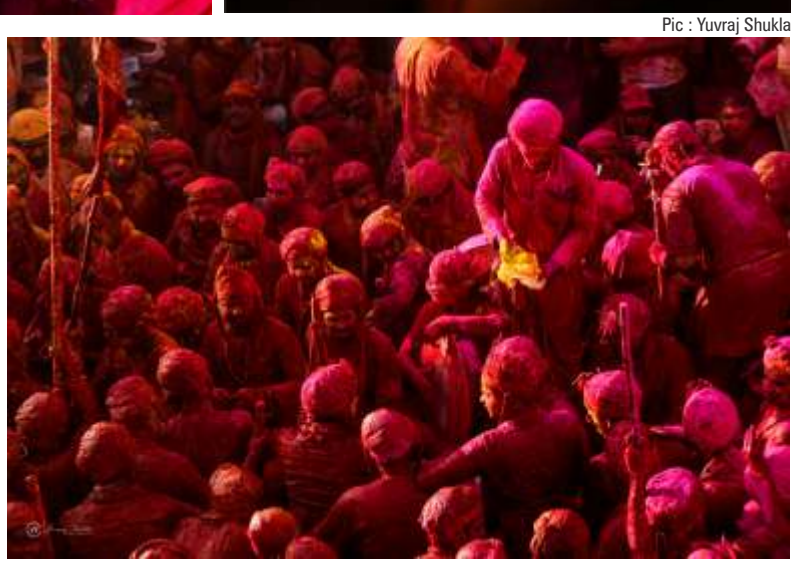

RNI No. : UPHIN/2017/74695, **स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक** - सुरेंदर सिंह बिष्ट, शॉप नं. 3, शान्ति मार्केट, लक्ष्मणपुरी गेट, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 द्वारा ज्ञान प्रिंटर्स, 207, 208 लेखराज मार्केट-2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित।
सम्पादक - सुरेंदर सिंह बिष्ट, फोन - 0522-4108575, ई-मेलः infostudionewsup@gmail.com, वेबसाइट : www.studionews.co.in